Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 27

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

30 शव्वाल 1440 हिजरी कमरी 4 वफा 1397 हिजरी शमसी 4 जुलाई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

इस्लाम के आरम्भ में प्रतिरक्षात्मक लड़ाईयों और जिस्मानी जंगों की इसलिए भी ज़रूरत पड़ती थी कि इस्लाम की दावत करने वाले का जवाब उन दिनों में दलीलों तथा तर्कों से नहीं बल्कि तलवार से दिया जाता था। इसलिए विवश हो कर प्रत्युत्तर में तलवार से काम लेना पड़ा लेकिन अब तलवार से जवाब नहीं दिया जाता बल्कि क़लम और दलीलों से इस्लाम पर आलोचनाएं की जाती हैं। यही वजह है कि इस ज़माना में ख़ुदा तआला ने चाहा है कि सैफ (तलवार) का काम क़लम से लिया जाए और लेखनी से मुक़ाबला कर के मुख़ालिफ़ों को पस्त किया जाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लाम को जंग की दो ताकतें दी गई थीं

अब देखो कि यही रिबात का शब्द जो उन घोड़ों पर बोला जाता है जो सरहद पर दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए बाँधे जाते हैं। ऐसा ही यह शब्द उन नफ़्सों पर भी बोला जाता है जो इस जंग की तैयारी के लिए शिक्षा प्राप्त हों। जो इन्सान के अंदर ही अंदर शैतान से हर वक़त जारी है। यह बिलकुल ठीक बात है कि इस्लाम को दो क़ुव्वतें जंग की दी गई थीं। एक क़ुव्वत वह थी जिसका प्रयोग पहली सदियों में बतौर प्रतिरक्षा अथवा इंतिक़ाम के हुआ। अर्थात अरब के मुशरेकीन ने जब सताया और तकलीफ़ें दीं तो एक हज़ार ने एक लाख कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला कर के बहादुरी के गुण दिखाए और हर परीक्षा में इस पवित्र क़ुव्वत का सबूत दिया। वह ज़माना गुज़र गया और रिबात के शब्द में जो फ़िलासफ़ी ज़ाहिरी क़ुव्वत जंग और फ़नून जंग की छुपी हुई थी वह प्रकट हो गई है।

इस ज़माना में भीतरी जंग के नमूने दिखाने अभीष्ट हैं

अब इस ज़माना में जिसमें हम हैं जंग ज़ाहिरी की कुछ भी ज़रूरत और आवश्यकता नहीं। बल्कि इन आख़री दिनों में भीतरी जंग के नमूने दिखाने अभीष्ट थे और रुहानी मुक़ाबला समक्ष था। क्योंकि उस वक़्त भीतरी इर्तिदाद और इलहाद के प्रकटन के लिए बड़े बड़े सामान और मध्यम बनाए गए। इसलिए उनका मुक़ाबला भी इसी किस्म के असलहों से ज़रूरी है। क्योंकि आजकल अमन तथा शान्ति का ज़माना है और हम को हर तरह की सुविधा और अमन हासिल है। आज़ादी से हर आदमी अपने मज़हब का प्रकाशन और तब्लीग़ और आदेशों को पूर्ण कर सकता है। फिर इस्लाम जो अमन का सच्चा समर्थक है, बल्कि वास्तव में अमन और सलामती और प्रेम को फैलाने वाला ही इस्लाम है क्योंकर इस अमन तथा आज़ादी के ज़माना में इस पहले नमूना को दिखाना पसंद कर सकता था ? अत: आजकल वही दूसरा नमूना अर्थात रुहानी मुजाहिदा अभीष्ट है क्योंकि

कि हलवा चू यकबार ख़ुर्द नदो बस

मौजूदा ज़माना में जिहाद

एक और बात भी है कि इस पहले नमूना के दिखाने में एक और बात भी समक्ष थी। अर्थात इस वक़्त बहादुरी का इज़हार भी मक़सूद था जो इस वक़्त की दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रशंसनीय और प्यारा गुण समझा जाता था और इस वक़्त तो जंग एक फ़न हो गया है कि दूर बैठे हुए भी एक आदमी तोप और बंदूक़ चला सकता है। उन दिनों में सच्चा बहादुर वह था जो तलवारों के सामने सीना निकालता था। और आजकल का जंग का फ़न तो बुज़दिलों का पर्दापोश है। अब बहादुरी का काम नहीं बल्कि जो आदमी जंग के नए माध्यम और नई तोपें इत्यादि रखता और चला सकता है वे कामयाब हो सकता है। इस जंग का मुद्दा और मक़सद मोमिनों के छुपे हुए बहादुरी के माद्दा का इज़हार था और ख़ुदा तआला ने जैसा चाहा ख़ूब तरह उसे दुनिया पर ज़ाहिर किया। अब उस की ज़रूरत नहीं रही इसलिए कि अब जंग ने फ़न और मकीदत और खदीयत की शक्ल धारण कर ली है और नए नए जंग के हथियार और पेचदार अस्त्र ने इस क़ीमती और गर्व के योग्य गुण को ख़ाक में मिला दिया है। इस्लाम के आरम्भ में प्रतिरक्षात्मक लड़ाईयों और जिस्मानी जंगों की इसलिए भी ज़रूरत पड़ती थी कि इस्लाम की दावत करने वाले का जवाब उन दिनों में दलीलों तथा तर्कों से नहीं बल्कि तलवार से दिया जाता था। इसलिए विवश हो कर प्रत्युत्तर में तलवार से काम लेना पड़ा लेकिन अब तलवार से जवाब नहीं दिया जाता बल्कि क़लम और दलीलों से इस्लाम पर आलोचनाएं की जाती हैं। यही वजह है कि इस ज़माना में ख़ुदा तआला ने चाहा है कि सैफ (तलवार) का काम क़लम से लिया जाए और लेखनी से मुक़ाबला कर के मुख़ालिफ़ों को पस्त किया जाए। इसलिए अब किसी के योग्य नहीं कि क़लम का जवाब तलवार से देने की कोशिश करे।

गर हिफ़्ज़ मुरातिब नकनी ज़िंदीक़ी

इस वक़्त क़लम की ज़रूरत है

इस वक़्त जो ज़रूरत है वह निसन्देह समझ लो। तलवार की नहीं बल्कि क़लम की है। हमारे मुख़ालिफ़ीन ने इस्लाम पर जो शंकाएं की हैं और विभिन्न साईंसों और औज़ारों की दृष्टि से अल्लाह तआला के सच्चे मज़हब पर हमला करना चाहा है। उसने मुझे मुतवज्जा किया है कि मैं क़लम का असलाह पहन कर इस साईंस और इलमी तरक़्क़ी के रणक्षेत्र में उतरूं और इस्लाम की रुहानी बहादुरी और बातिनी क़ुव्वत का करिश्मा भी दिखाओं। मैं कब इस मैदान के योग्य हो सकता था? यह तो सिर्फ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है और इस की बेहद इनायत है कि वह चाहता है कि मेरे जैसे विनीत इन्सान के हाथ से इस के धर्म की इज़्ज़त ज़ाहिर हो। मैंने एक वक़्त उन आरोपों और हमलों को गिना था जो इस्लाम पर हमारे मुख़ालिफ़ीन ने किए हैं। उनकी संख्या उस वक़्त मेरे ख़्याल और अंदाज़ा में तीन हज़ार हुई थी और मैं समझता हूँ कि अब तो और भी संख्या बढ़ गई होगी। कोई यह ना समझ ले कि इस्लाम की बुनियाद ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि इस पर तीन हज़ार एतराज़ वारिद हो सकता है। नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं। ये आरोप तो बुरा चाहने वालों और नादानों की नज़र में आरोप हैं मगर मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मैंने जहां उन आरोपों को गिना वहां यह भी ग़ौर किया है कि इन आरोपों की तह में दरअसल बहुत ही दुर्लभ सच्चाइयां मौजूद हैं जो अन्धेपन के कारण उनको दिखाई नहीं दें और हक़ीक़त में यह ख़ुदा तआला की हिक्मत है कि जहां अन्धा आरोप लगाने वाला आकर अटका है वहीं हक़ायक़ तथा मआरिफ़ का छुपा हुआ ख़ज़ाना रखा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 49 से 51 प्रकाशन 2018 कादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

यह केवल और केवल अल्लाह तआला का फज़्ल है कि उस ने यह मर्कज़ प्रदान किया है।

दुश्मन ने अपने विचार में जिन फज़्लों और नेअमतों को हम से छीनना चाहा था अल्लाह तआला पहले से बढ़ कर और पहले के कई गुणा बढ़ा कर इस मस्जिद और इस मर्कज़ से वह तरिक्कयों के नज़ारे दिखा रहा है।

जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से है ना दुनिया की कोई हुकूमत उस की तरक़्क़ी रोक सकती है और ना किसी हुकूमत की मदद की जमाअत अहमदिया अपनी तरक़्क़ी के लिए मुहताज है।

हम जब तक अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते रहेंगे जब तक अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने की कोशिश करते रहेंगे अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के मौरिद बनते हुए इन तरक्कियों का हिस्सा बने रहेंगे।

जो लोग यहां मर्कज़ बनने की वजह से इस नई आबादी के निकट आकर आबाद होने की कोशिश कर रहे हैं या हो रहे हैं उन्हें यह कोशिश करनी चाहिए कि अपनी हालतों को ऐसा बनाएँ कि इस इलाक़े में अहमदियत और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर लोगों को नज़र आए।

अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी तो इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हमारी बातें और हमारे काम हमारी तालीम और हमारे अनुकरण एक दूसरे से मुताबिक़त रखते हों।

मस्जिदों का जो मक़सद है उसे पूरा करना होगा तभी अल्लाह तआला के इनाम मिलेंगे।

कर्मों के लिए श्रद्धा शर्त है

एक वास्तविक आबिद जो अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो कर इबादत करता है वह ना सिर्फ अपनी रुहानी हालत बेहतर करता है अल्लाह तआला से सम्बन्ध में बढ़ता है बल्कि अपनी जिस्मानी हालत भी ठीक करता है और अल्लाह तआला की नेअमतों का इस्तिमाल भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए करता है।

इस मर्कज़ के बनने पर अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा करने के लिए हमें जहां अपनी इबादतों के स्तरों को बुलंद करने की ज़रूरत है वहां अख़लाक़ी स्तरों को भी बुलंद करने की ज़रूरत है इस रमज़ान को इस लिहाज़ से भी विशेष बना लें कि अपने घरों को भी इस महीने की बरकतों से हम ने संवारना है।

दुनिया के इस हिस्से में अल्लाह तआला ने मर्कज़ की तौफ़ीक़ दी जो तौहीद से ख़ाली है बल्कि शिर्क से भरा हुआ है कि यहां से एक नए इरादे के साथ तौहीद को फैलाने के काम करो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मिशन को पूरा करो और फिर वह दिन भी आए जब बस्तियों की बस्तियां और शहरों के शहर अल्लाह तआला की तौहीद का ऐलान करने वाले हों।

अहमदियत की तरक़्क़ी और दुनिया के इस क्षेत्र में मर्कज़ की तामीर के मक़सद को पूरा करने के लिए दुआ करें और बहुत दुआ करें। .... तमाम मुख़ालिफ़ीन के मन्सूबों को तहस नहस होते हम देखें। रब्वह जाने के रास्ते भी खुलें और कादियान जो मसीह की तख़तगाह है वहां वापसी के रास्ते भी खुलें और मक्का और मदीना जाने के लिए रास्ते भी हमारे लिए खुलें कि वह हमारे आक़ा तथा मुताअ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बस्तियां हैं और इस्लाम के दाइमी मर्कज़ हैं।

अहमदियत के नए मर्कज़ इस्लामाबाद (टिलफोर्ड) में नए तैय्यार हुई मस्जिद मुबारक के उद्घाटन के अवसर पर यादगारी प्लेट का उठाना और अल्लाह तआला का सज्दा शुक

ख़ुत्बा जुम्अः में अल्लाह तआला के असंख्य फज्लों के नाज़िल होने पर सारे अहमिदयों को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने और अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की नसीहत और इसी तरह मस्जिद और नए मर्कज़ का कुछ विवरण।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़, दिनांक 17 मई 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक,इस्लामाबाद। (टलफ़ोर्ड, यू.के.)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अमीरल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा जुम्अः से पहले मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद में नियमित उद्घाटन फरमाते हुए प्लेट से पर्दा उठाया और मस्जिद में तशरीफ लाकर फरमाया

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह बरकातो। अभी बाहर मैंने मस्जिद के उद्घाटन की जो प्लेट लगी हुई थी उस का पर्दा हटा दिया वह तो उद्घाटनहो गया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जब रब्वह की मस्जिद मुबारक का उद्घाटन फ़रमाया तो उस वक़्त फ़रमाया था कि उद्घाटन से पहले दो नफ़ल का प्रबन्ध होना चाहिए लेकिन इस वक़्त तो प्रबन्ध नहीं हो सकता था तो उन्होंने फ़रमाया कि हम सजदा शुक्र करेंगे।

(ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 32 पृष्ठ 48 ख़ुत्बा जुम्अः 23 मार्च 1951 ई)

प्रायः रिवायत यह है कि मैं जब प्लेट के उद्घाटन का पर्दा हटाता हूँ तो हम दुआ करते हैं। आज उसी तरीक़ पर अनुकरण करते हुए बजाय दुआ के अभी मैं सजदा शुक्र करूँगा आप इस में शामिल हों अल्लाह तआला ने एक छोटा सा मर्कज़ हमें प्रदान फ़रमाया एक मस्जिद प्रदान फ़रमाई और इस के बाद फिर बाक़ायदा ख़ुत्बा शुरू होगा। सजदा शुक्र कर लें। (इस के बाद हुज़ूर अनवर के अनुकरण में सभी हाज़िर लोगों ने सज्दा शुक्र किया)

तशह्हुद,ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

قُلْ أَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَأَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ
تَعُوْدُوْنَ۔ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ۔ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ۔

(अल्आराफ 30 से32)

इन आयतों का अनुवाद है कि तो कह दे मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुक्म दिया है और यह कि हर मस्जिद के पास अपनी तवज्जा दरुस्त कर लिया करो और अल्लाह की इबादत को ख़ालिस उसी का हक़ क़रार देते हुए उसी को पुकारो जिस तरह उस ने तुम को शुरू किया था। फिर एक दिन तुम उसी हालत की तरफ़ लौटोगे।एक पक्ष को उसने हिदायत दी लेकिन एक और पक्ष है जिस पर गुमराही वाजिब हो गई है अर्थात वह गुमराही का अधिकारी ठहरा है उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना दोस्त बना लिया है और वे ख़्याल करते हैं कि वह हिदायत पा गए हैं। हे आदम के बेटो!हर मस्जिद के क़रीब ज़ीनत के सामान धारण कर लिया करो और खा और पीओ और इसराफ़ ना करो क्योंकि वह अल्लाह इसराफ़ करने वालों को पसन्द नहीं करता।

अलहमदु लिल्लाह अल्लाह तआला आज हमें इस्लामाबाद में, इस्लामाबाद की इस मस्जिद में जुम्अ पढ़ने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा रहा है। जैसा कि कुछ जुम्अ पहले मैंने मर्कज़ इस्लामाबाद स्थान्तरित होने के बारे में कहा था कि मस्जिद फ़ज़ल के साथ अब दफ़्तरों इत्यादि के इंतिज़ामात में काफ़ी तंगी महसूस की जाने लगी थी और अब दफ़्तरों के लिए भी ज़्यादा बेहतर और खुली गुंजाइश की ज़रूरत है जो अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस्लामाबाद के तामीराती मंसूबे के पूर्ण होने के बाद काफ़ी हद तक उपलब्ध आ गई है। इसी तरह जमाअत के ख़िदमत करने वालों और दफ़्तरों में काम करने वाले कुछ लोगों को गुंजाइश के अनुसार रिहायश भी उपलब्ध हो गई है। इसी तरह ख़लीफ़ा वक़्त की रिहायश भी तामीर हो गई है। ख़लीफ़ा वक़्त की रिहायश के साथ यह भी ज़रूरी है कि मस्जिद भी हो ताकि ख़लीफ़ा वक़्त के अनुकरण में लोगों नमाज़ों की अदायगी आराम से कर सकें और दूसरे जो काम हैं दर्स तथा तदरीस के वह भी ख़लीफ़ा वक़्त सहूलत से कर सके। यद्यपि आज रस्मी तौर पर हम इस जुम्अ: के साथ मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं लेकिन वास्तव में मेरे यहां मुंतक़िल होते ही नमाज़ों और दूसरे प्रोग्रामों का सिलसिला शुरू हो गया था। बाहर से ख़ुद्दाम इतफ़ाल और लजना के वफ़ूद आते रहे और काफ़ी बड़ी संख्या में इस में शामिल होने वाले लोग आते रहे। इस लिए इस मस्जिद में उनके साथ मजलिसें भी होती रहें और जिनके साथ प्रोग्राम दूसरे छोटे हालों में हुए तो नमाज़ के लिए मस्जिद में आसानी से सहूलत हासिल हो गई वह यहां आ सके। यह मस्जिद मस्जिद फ़ज़ल से लगभग चार गुना ज़्यादा गुंजाइश रखती है लेकिन जो लोगों के वफ़ूद आते रहे इस में यह अंदाज़ा हुआ कि यह मस्जिद भी छोटी पड़ती रही है लेकिन इस के साथ ही क़िबला की तरफ एक मल्टी परपोज़ हाल बनाया गया है इस में गुंजाइश है। इस में अधिक लोग नमाज़ पढ़ते रहे। बहरहाल ये बातें कहने का मक़सद यह है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत यू के में भी और दुनिया के विभिन्न देशों में भी मस्जिदें बन रही हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछले दस पंद्रह साल में मस्जिदों की तामीर में जमाअतों को विशेष ध्यान पैदा हुआ है और मस्जिदों की तामीर हो रही हैं इस ध्यान की वजह से लेकिन इस मस्जिद का जिसका नाम मैंने मस्जिद मुबारक रखा है इस लिहाज़ से इस की एहमीयत है कि ख़लीफ़ा वक़्त की रिहायश भी यहां है। ख़िदमत करने वालों में से लगभग उनत्तीस तीस लोगों की रिहायश भी यहां है अच्छे मुनासिब घरों की सूरत में और सारी ज़रूरी दफ़्तर जिनसे मेरा रोज़ाना प्राय अधिक सम्बन्ध रहता है वह भी यहां हैं। अर्थात यह जगह और यह मस्जिद इस लिहाज़ से मर्कज़ी मस्जिद है और यह एहमीयत रखती है। अल्लाह तआला करे कि यह मस्जिद इस लिहाज़ से मस्जिद मुबारक की प्रतिरूप भी हो और अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने वाली और हर लिहाज़ से मुबारक भी हो।

जब इस का नाम रखने का परामर्श हो रहा था तो इस से पहले और नाम ज़ेहन में आते रहे कुछ नामों के मश्वरे भी होते रहे लेकिन फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम का यह इलहाम एक दम मेरे सामने आ गया जिसकी वजह से यह नाम रखा गया। इल्हाम यह था

"مُبَارِكٌ وَّمُبَارَكٌ وَّكُلُّ اَمْرٍ مُّبَارَكٍ يُّجْعَلُ فِيْهِ"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के शब्दों में ही इस का अनुवाद यह है कि अर्थात यह मस्जिद बरकत देने वाली और बरकत पाई हुई है और हर एक मुबारक काम इस में किया जाएगा।

(तज़किरा पृष्ठ 83 प्रकाशन चतुर्थ)

अल्लाह तआला करे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो दुआएं मस्जिद मुबारक कादियान में कीं और जो आपकी इच्छाए और तड़प दुनिया में इस्लाम के फैलने और ग़लबा हासिल करने के लिए थी वह इस मस्जिद को भी पहुँचती रहें और इंग्लिस्तान और यूरोप और दुनिया के सभी देशों में यहां से तौहीद के फैलाने और इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने वाली यह मस्जिद और यह मर्कज़ हमेशा बने रहें। यहां मर्कज़ का आना हर लिहाज़ से मुबारक हो और ख़िलाफ़त अहमदिया की तरफ़ से जारी होने वाले सभी मंसूबे हमेशा अल्लाह तआला के फ़ज़ल और बरकत को जज़ब करते रहें और अल्लाह तआला की नज़र में जिन बरकतों का हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम की मस्जिद से सम्बन्ध था वह उसे भी मिलती रहें। मुझे कल तक यह नहीं पता था और कल ही मेरे सामने यह बात आई कि जब रब्वह की आबादी शुरू हुई है तो उस वक़्त भी हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने मस्जिद मुबारक की तामीर के वक़्त यही फ़रमाया था कि यह मस्जिद मस्जिद मुबारक कादियान के क़ायमक़ाम और इस का प्रतिरूप और मसील होगी अर्थात रब्वह में जो मस्जिद मुबारक थी वह उस का मसील होगी।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 30 पृष्ठ 316 ख़ुत्बा जम्अ: 30 सितम्बर 1949 ई)

बहरहाल वहां एक लंबा अरसा ख़िलाफ़त रही और अभी भी मर्कज़ी दफ़्तिर वहां हैं लेकिन पिछले 35 साल से वहां से हिज्रत की वजह से यहां भी ज़रूरत थी नए दफ़्तरों की नई चीज़ों की इमारतों की और मस्जिदों की। मुल्क के क़ानून की वजह से ख़िलाफ़त अहमदिया को रब्वह से हिज्रत करनी पड़ी और फिर अल्लाह तआला ने यहां की ज़रूरत को पूरा करने के लिए यहां पहले से बढ़कर तरक्कियों के दरवाज़े भी खोले। अल्लाह तआला इन सामर्थ्यों को और अधिक बढ़ाता चला जाए जो अल्लाह तआला ने हमें प्रदान फ़रमाए हैं और दुश्मन ने अपने विचार में जिन फ़ज़लों और बरकतों को हमसे छीनना चाहा था अल्लाह तआला पहले से बढ़कर और कई गुणा बढ़कर इस मस्जिद और इस मर्कज़ से वह तरक्कियों के नज़्ज़ारे दिखाए।

अपने विचार में जमाअत की ज़िन्दगी और क़िस्मत के मालिक बने होओं की अक़्ल का भी यह हाल है और जहालत की यह हालत है कि किसी ने मुझे दिखाया कि सोशल मीडिया पर पीपलज़ पार्टी के सियास्तदान यह वर्णन कर रहे थे और कमेंट दे रहा था कि हमने जमाअत अहमदिया पर पाबंदियां लगाई थीं और उनको पाकिस्तान में पनपने नहीं दिया था और यह नई हुकूमत आई है तो उन्होंने अहमदियों और क़ादियानियों को इस्लामाबाद में मर्कज़ बनाने की इजाज़त दे दी है। यह उनकी अक़्ल का हाल है। कुछ अर्सा पहले भी उनके एक सियास्तदान ने हमारे बारे में इसी तरह का जाहिलाना बयान दिया था और फिर बाद में कह दिया ओहो ग़लती हो गई मैं ठीक तरह समझा नहीं था। तो बहरहाल यह तो उन दुनियादारों की सोचें हैं। उनको क्या पता कि जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी अल्लाह तआला के फ़ज़लों से है ना दुनिया की कोई हुकूमत उस की तरक़्क़ी रोक सकती है और ना किसी हुकूमत की मदद की जमाअत अहमदिया अपनी तरक़्क़ी के लिए मुहताज है। हम जब तक अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते रहेंगे जब तक अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने की कोशिश करते रहेंगे अल्लाह तआला के फ़ज़लों के मौरिद बनते हुए इन तरक्कियों का हिस्सा बने रहेंगे। अत: हमें अपनी हालतों की समीक्षा करते रहना चाहिए।

जिन लोगों को अल्लाह तआला ने इस नई बस्ती में रहने की तौफ़ीक़ दी है और जो लोग यहां मर्कज़ बनने की वजह से इस नई आबादी के निकट आकर आबाद होने की कोशिश कर रहे हैं या हो रहे हैं उन्हें यह कोशिश करनी चाहिए कि अपनी हालतों को ऐसा बनाएँ कि इस इलाक़े में अहमदियत और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर लोगों को नज़र आए। बेशक इस्लामाबाद में एक लंबा समय हमारे वाक़फ़ीन ज़िंदगी और काम करने वाले रहते रहे हैं और यहां के रहने वाले लोग इस लिहाज़ से अहमदियों से परिचित भी हैं। बेशक जलसों की वजह से भी इस इलाक़े में अहमदियत का परिचय है। 2004 ई तक बड़ा लंबा अरसा यहां जलसे होते रहे लेकिन और फिर अब आलटन में हो रहे हैं वह भी क़रीब ही जगह है लेकिन अब एक नई सूरत यहां की आबादी को मिली है और इस लिहाज़ से यहां के मुक़ामी लोग भी हमें एक और नज़र से देखेंगे कि अचानक जो यहां आकर अहमदियों ने घर लेने शुरू कर दिए हैं यहां की आबादी को इस का एहसास हो गया है और वह इस का ज़िक्र भी करने लग गए हैं कि तुम्हारे जो ख़लीफ़ा हैं या तुम्हारी जमाअत के जो सरबराह हैं उनके यहां आने की वजह से अचानक इस तरफ़ तुम लोगों का रुख हुआ है। अत: इस वजह से अपने नमूने पहले से बढ़कर दिखाने होंगे उन पर अपना अच्छा असर डालना होगा। अगर हमारे शोर की वजह से हमारे ट्रैफ़िक की बेक़ाइदगी की

वजह से या किसी भी और वजह से पड़ोसी disturb होते हैं तो एक ग़लत पैग़ाम हम यहां के रहने वालों को दे रहे होंगे। अगर हम अपने अनुकरण से इस्लाम का सही पैग़ाम नहीं दे रहे तो अल्लाह तआला के नाम पर हमारी शुक्रगुज़ारी सिर्फ़ मुँह की बातें होंगी। अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी तो इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हमारी बातें और हमारे काम हमारी तालीम और हमारे अनुकरण एक दूसरे से मुताबिक़त रखते हूँ ना यह कि हम कहें कुछ और करें कुछ।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में हमें मस्जिदों के हवाले से भी इरशाद फ़रमाए हैं। ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं उनमें भी हमें बहुत अहम बातों की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है इन बातों की तरफ़ अगर हम ध्यान रखें तो जहां हम अल्लाह तआला की इबादत के हक़ अदा करने वाले होंगे वहां उस की मख़लूक़ के हक़ अदा करने वाले भी हों। इन आयतों में अल्लाह तआला मोमिनों को मुसलमानों को स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है कि अगर तुम अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने चाहते हो तो अपने ईमान को अपने धर्म को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करो। अगर यह नहीं करोगे तो तुम्हारी तरक़्क़ी नहीं बल्कि तुम गुमराही के गढ़े में पड़ोगे। मस्जिदों का जो मक़सद है उसे पूरा करना होगा तभी अल्लाह तआला के इनाम मिलेंगे। अल्लाह तआला के लिए अपनी इबादतों को ख़ालिस करना होगा तभी अल्लाह तआला के इनामों के वारिस होंगे। दुनियावी ख़्यालों और प्राथमिकताओं से अपने ज़हनों को पवित्र करना होगा तभी अल्लाह तआला के फ़ज़ल भी तुम पर नाज़िल होंगे। दिन में जब पाँच बार यह कोशिश होगी तो तभी फिर हम अल्लाह तआला के लिए धर्म को ख़ालिस करने वाले होंगे।

अत: अल्लाह तआला हमें फ़रमाता है कि अपनी रूह की सफ़ाई के भी प्रबन्ध रखो और यह सफ़ाई सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के धर्म को ख़ालिस करते हुए हो सकती है और जो लोग अपनी हिदायत के सामान करने की कोशिश नहीं करते जो लोग अल्लाह तआला के धर्म को ख़ालिस नहीं करते वे लोग अल्लाह तआला के लिए धर्म को ख़ालिस नहीं करते वे लोग गुमराही के गढ़े में जा पड़ते हैं ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह तआला की पनाह हासिल करने की बजाय शैतान को अपना दोस्त बना लिया है और फिर वे यह ख़्याल करते हैं कि उनके अनुकरण ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के अनुसार हैं। अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजे हुए का इनकार करने वालों का यही हाल है। आजकल जो बुरे उलमाए जो हम देखते हैं हमारे मुख़ालफ़ीन जो हैं उनका यही हाल है। अपने साथ जन साधारण को यह उल्मा गुमराह कर रहे हैं। इन लोगों की यही सोच है कि हमारे से ज़्यादा अर्थात उन लोगों से ज़्यादा इस्लाम पर अनुकरण करने वाला कोई नहीं। अपने मक़सद हासिल करने के लिए कोई भी तरीक़ा और कोशिश या चेष्टा यह नहीं छोड़ते और हुकूमतें भी फिर उनसे भयभीत रहती हैं आजकल पाकिस्तान में कराची में इस मुख़ालिफ़त का ज़ोर है और इस बात पर ज़ोर है और हुकूमत भी उनकी यही कहती है कि हम अपनी मस्जिदों के मिनारे गिराएँ। लाख उनको कहा कि यह मस्जिदों के मिनारे जो बने हुए हैं पुरानी मस्जिदें हैं पचास साठ साल से बनी हुई मस्जिदें हैं यह लेकिन उनको समझ ही नहीं आती। मौलवी का ख़ौफ़ बहुत अधिक है। जमाअत के लोगों पर पर ज़ुल्म तथा अत्याचार में ये लोग बढ़ते चले जा रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ गन्द बकने में हद से बढ़े हुए हैं। ऐसे ही लोगों के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उन पर गुमराही लाज़िम हो चुकी है जो तथा कथित उल्मा उस के पीछे हैं निस्संदेह उनकी गिनती उन लोगों में होती है जिनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि इस आख़िरी ज़माने में मस्जिदें बज़ाहिर आबाद नज़र आऐंगी और जो हमें आजकल वहां देखने में नज़र भी आती हैं ग़ैरों की लेकिन हिदायत से ख़ाली होंगी और इन्ही में से फ़ित्ने उट्ठेंगे और वहीं लौट जाऐंगे और ये लोग इस्लाम को बदनाम करने वाली मख़लूक़ होगी जो बदतरीन मख़लूक़ है।

(शुअबुल ईमान लिल्बहीक़ी जिल्द 3 पृष्ठ 317-318 हदीस 1763 प्रकाशन मक्तबा अर्रुशद नाशेरून बैरूत 2003 ई)

अत: ऐसे में हमारी और भी ज़्यादा ज़िम्मेदारी बन जाती है कि अपनी इबादतों को भी ख़ालिस करें और दुनिया को इस्लाम की वास्तविक तालीम से भी आशना करें। हमारे लिए तो हमारी कोशिश से ज़्यादा इस्लाम की वास्तविक तालीम को फैलाने के लिए अल्लाह तआला रास्ते खोलता है और यह मर्कज़ भी उन्ही में से एक है। अत: हमें अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए हमारी ज़ाती कोशिश होती या जमाअती कोशिश होती तो यह कभी तामीर ना हो सकता। यह सिर्फ़ केवल और केवल अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि उसने यह मर्कज़ प्रदान फ़रमाया इन रमज़ान के दिनों में जब रूह की बेहतरी के लिए अल्लाह तआला ने सामान मुहय्या पहुंचाए हैं अपने धर्म को पहले से बढ़कर अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करने की कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के लिए धर्म को ख़ालिस करने के लिए हमारी किस तरह रहनुमाई फ़रमाई है इस बारे में आपने एक अवसर पर फ़रमाया

"क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि اُدۡعُوۡہُ مُخۡلِصِیۡنَ لَہُ الدِّیۡنَ (अलआराफ 30) इख़लास से ख़ुदा तआला को याद करना चाहिए और इस के एहसानों का बहुत अध्ययन करना चाहिए। ....चाहिए कि इख़लास हो एहसान हो और इस की तरफ़ ऐसा रुजू हो कि बस वही एक रब और वास्तविक कार बनाने वाला है। फ़रमाया कि

"इबादत के उसूल का ख़ुलासा असल में यही है कि अपने आपको इस तरह से खड़ा करे कि मानो ख़ुदा को देख रहा है और या यह कि ख़ुदा उसे देख रहा है हर किस्म की गन्दगी और हर तरह के शिर्क से पाक हो जाए और इसी की अज़मत और इसी की रबूबियत का ख़्याल रखे। फ़रमाया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम की दुआएं और दूसरी दुआएं ख़ुदा से बहुत मांगे और बहुत तौबा इस्तिग़फ़ार करे और बार-बार अपनी कमज़ोरी का इज़हार करे ताकि नफ्स का हो जाए और ख़ुदा से सच्चा सम्बन्ध हो जाए और इसी की मुहब्बत में लीन हो जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 451)

अत: अल्लाह तआला के लिए जब धर्म ख़ालिस होगा, इबादत ख़ालिस होगी तो तज़किया नफ़्स भी होगा। अपने नफ़्स को पाक करने का अवसर भी मिलेगा। अल्लाह तआला की इबादतों का भी हक़ अदा होगा और बंदों के हुक़ूक़ अदा करने के लिए भी अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करने की कोशिश होगी। किसी ने सोशल मीडीया पर एक वीडीयो दिखाई कि इफ़तार के वक़्त बड़े प्रबन्ध से मुसलमान एक जगह इफ़तार के लिए जमा हुए और किसी बात पर शायद खाने पर ही पहले गालम ग्लोच शुरू हुई और इस से बढ़कर फिर हाथा पाई और लड़ाई शुरू हो गई। एक दूसरे को मुक्के मार रहे हैं लड़ाई कर रहे हैं नोच घसोट कर रहे हैं खाना इधर उधर बिखरा पड़ा है। ख़ुद कोई उधर लुढ़क रहा है कोई इधर लुढ़क रहा है ना बड़ी उम्र वाले की इज़्ज़त है ना छोटे का लिहाज़ है। आपस में एक दूसरे से लड़ रहे हैं और यह इस दौरान हो रहा है जो रोज़े की हालत है और बाक़ायदा जिस तरह उनका रिवाज है कि लंबे क़मीज़ें पहन के नमाज़ों के लिए भी आते हैं और जुब्बे पहन के आए हुए हैं और लड़ाईयां हो रही हैं। अल्लाह तआला ने तो इस हालत में यह कहा है कि तुम रोज़े की हालत में कोई ग़लत बात नहीं करनी लड़ाई करने वाले को भी जवाब नहीं देना और यह कह देना कि मैं रोज़ेदार हूँ और अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि रोज़े का मैं बदला हूँ तो क्या इस किस्म के रोज़ेदारों का अल्लाह तआला बदला बनेगा क्या ये लोग हैं जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले बन रहे हैं? क्या ये तज़किया नफ़्स है जो रोज़ों से उनको हो रहा है। इन बातों से और भी स्पष्ट हो जाता है कि आने वाले इमाम को मानने की क्या एहमीयत थी और कितना ज़रूरी था कि मुसलमानों की इस्लाह के लिए इमाम वक़्त आता और जब वह आया तो इस को नहीं स्वीकार कर रहे लेकिन यह बातें हमें और इस तरफ़ ध्यान दिलात हैं कि हम अपनी समीक्षा करें अपनी इस्लाह करें छोटी छोटी बातों पर हमारे अन्दर भी अगर कोई रंजिशें और बेचैनियां हैं तो उनको दूर करें और रोज़ों का हक़ अदा करने वाले हूँ।

अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस होते हुए उस की इबादत करने वाले हों और फिर उस के आदेशों पर अनुकरण करने वाले हों। इसी तरह एक और अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

इस वक़्त इस्लाम जिस चीज़ का नाम है इस में फ़र्क़ आ गया है । सारे अख़लाक़ ज़मीमा भर गए हैं अर्थात जो ग़लत किस्म की बातें हैं फ़ुज़ूल बातें हैं बुरे आचरण हैं बुराईयां हैं वे तो बहुत भर गए हैं और वह इख़लास..... आप फ़रमाते हैं और वह इख़लास जिसका ज़िक्र मख़लसीन लहुद्दीन में हुआ है आसमान पर उठ गया है। अर्थात उस का कोई वजूद ही नहीं नज़र आता। ख़ुदा के साथ सिदक़ वफ़ादारी इख़लास मुहब्बत और ख़ुदा पर भरोसा समाप्त हो गए हैं। अब ख़ुदा तआला ने इरादा किया है आप फ़रमाते हैं कि अब ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि फिर नए सिरे से उन कुव्वतों को ज़िन्दा करे।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 352-353)

फिर आपने फ़रमाया कि अब यह ज़माना है कि इस में दिखावा गर्व अहंकार इत्यादि बुरे आचरण तरक़्क़ी कर गए हैं ये सब बुराईयां जो हैं इस में तो बड़ी तरक़्क़ी हो रही है और मुख़लसीन लहुद्दीन इत्यादि अच्छे गुण जो थे वे आसमान पर उठ

गए। फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला पर भरोसा इत्यादि सब बातें समाप्त हो गई हैं। अर्थात अल्लाह तआला पर तवक्कुल भी नहीं रहा अल्लाह तआला के सपुर्द अपने मामले एक मोमिन जो करता है इस का भी कोई सूरत नज़र नहीं शक्ल नज़र नहीं आती किसी मोमिन से बज़ाहिर जो so called मोमिन हैं तथा कथित मोमिन हैं। छोटी छोटी बातों पर लड़ाईयां हो रही हैं। बिलकुल ही अख़लाक़ ख़त्म हो चुके हैं। आप फ़रमाते हैं कि अब ख़ुदा का इरादा है कि उनका बाज रोपण हो।

(अल्बद्र जिल्द 3 नम्बर 10 दिनांक 8 मार्च 1904 ई पृष्ठ 3)

पहले फ़रमाया कि ख़ुदा का इरादा है कि इन कुव्वतों को ज़िन्दा करे इस में फ़रमाया ख़ुदा का इरादा है कि उनका बीज रोपण हो और यह बीज रोपण हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के माध्यम से हुआ है और ख़ुदा का इरादा इन अख़लाक़ को ज़िंदा करने का और इबादतों को ख़ालिस करने का अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने का अल्लाह तआला ने अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के माध्यम से जारी करने का इरादा किया और जारी फ़रमाया और आगे इस बीज रोपण से पैदा हुए हुए पौधों और दरख़्तों की शाख़ें हम ने बनना है और हम यह उस वक़्त कर सकते हैं जब अपनी इबादतों को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करें। दूसरों की कमज़ोरियाँ देखकर अपनी इस्लाह की कोशिश करें और अल्लाह तआला की रज़ा पर बाक़ी तर्जीहात पर हावी हो जाएं। एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि कर्मों के लिए इख़लास शर्त है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 354)

अत: सिर्फ़ ज़ाहिरी अनुकरण हो और इस में इख़लास ना हो अल्लाह तआला की रज़ा की तड़प ना हो वह कर्म बेकार है। नमाज़ें बेकार हैं। अत: यह भी हमें एक सचेत किया जा रहा है कि अपनी इबादतों को जब तक ख़ालिस नहीं करेंगेइन इबादतों का कोई फ़ायदा नहीं।

फिर एक अवसर पर आपने फ़रमाया

वाज़िह हो कि क़ुरआन शरीफ़ की दृष्टि से इन्सान की कुदरती हालतों को इस की अख़लाक़ी और रुहानी हालतों से निहायत ही शदीद सम्बन्धात हैं यहां तक कि इन्सान के खाने पीने के तरीक़े भी इन्सान की अख़लाक़ी और रुहानी हालतों पर-असर करते हैं जैसा कि मैंने कहा बताया था इफ़तार की यह घटना जो दी जा रही थी और लोग इफ़तारी के लिए इकट्ठे हुए थे उनकी मिसाल दी थी उनकी ज़ाहिरी हालत ही उनकी रुहानी हालत की तस्वीर खींचती है। अत: यह बातें ज़ाहिर करती हैं कि उनके अंदर रूहानियत अब ख़त्म हो चुकी है और फिर यह बातें हमें तवज्जा दिलाने वाली होनी चाहिऐं। आप फ़रमाते हैं और अगर इन कुदरती हालतों से शरीयत की हिदायत के अनुसार काम लिया जाए जैसा कि नमक के खान में पड़ कर हर चीज़ नमक हो जाती है ऐसा ही यह सारी हालतें अख़लाक़ी ही हो जाती हैं। (फ़रमाया जो अल्लाह तआला के आदेश हैं खाने पीने की बातें हैं बुनियादी अख़लाक़ हैं खानों में balance से खाना है ये चीज़ें अगर अल्लाह तआला के हुक्म को सामने रखते हुए की जाएं शरीयत की हिदायत के अनुसार की जाएं तो उनसे तुम्हारे अख़लाक़ भी अच्छे होंगे और फ़रमाया कि यह सारी हालतें अख़लाक़ी हो जाती हैं और रूहानियत पर बहुत गहरा असर करती हैं। इसीलिए क़ुरआन शरीफ़ ने सारी इबादतों और अंदरूनी पाकीज़गी के उद्देश्य और विनय के लक्ष्यों में शारीरित पिवत्रता और जिस्मानी आदाब और जिस्मानी तादील को भी बहुत ध्यान में रखा है।(ज़ाहिरी पाकीज़गी भी ज़रूरी है आदाब भी ज़रूरी हैं अपने आपको सही रखना भी ज़रूरी है तभी इन्सान मुतवाज़िन हो सकता है।) आप फ़रमाते हैं कि और ग़ौर करने के वक़्त यही फ़िलासफ़ी निहायत सहीह मालूम होती है कि जिस्मानी अंगों का रूह पर बहुत गहरा असर है जैसा कि हम देखते हैं कि हमारे कुदरती कर्म यद्यिप बज़ाहिर जिस्मानी हैं मगर हमारी रुहानी हालतों पर ज़रूर उनका प्रभाव है। जैसे जब हमारी आँखें रोना शुरू कर दें और यद्यिप दिखावे से ही रोएं मगर शीघ्र ही इन आँसूओं का एक शोला उठकर दिल पर जा पड़ता है। शीघ्र दिल भी दुखी हो जाता है। तब दिल भी आँखों की पैरवी कर के दुखी हो जाता है। ऐसा ही जब हम बनावट से हँसना शुरू करें तो दिल में भी एक खुशी पैदा होती है एक प्रसन्नता महसूस होती है। फ़रमाया कि यह भी देखा जाता है कि जिस्मानी सज्दा भी रूह में विनय और विनम्रता की आदत पैदा कर देता है। कई बार जिस्मानी सजदा करो तो इस सज्दे की हालत में भी एक विनय की हालत पैदा हो जाती है। इस के मुक़ाबिल पर हम भी देखते हैं कि जब हम गर्दन को ऊंची कर के और छाती को उभार कर चलें तो यह चलने की रफ़्तार हम में एक प्रकार का अंहकार और गर्व पैदा करती है तो फ़रमाते हैं कि इन नमूनों से पूरी स्पष्टता के साथ खुल जाता है कि बेशक जिस्मानी अंगों का रुहानी हालतों पर प्रभाव है।

(उद्धरित इस्लामी उसूल की फलास्फी रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 319-320)

इन्सान की रुहानी हालत को बेहतर करने के लिए फिर आपने यह भी फ़रमाया कि कि ज़ाहिरी ख़ुराक भी असर डालती है। इस लिए मुतवाज़िन ख़ुराक खानी चाहिए ना ही सिर्फ गोश्त काने वाले हो जाओ ना ही सिर्फ यह फ़ैसला कर लो कि हमने सब्जियों के अतिरिक्त कुछ नहीं खाना। अल्लाह तआला ने जो पाकीज़ा चीज़ें इन्सान के लिए पैदा की हैं उन्हें खाने की इजाज़त है जो हलाल हैं तय्यब हैं इस में बराबरी और सीमा से बढ़ना ना हो। तो यह इन्सान की रुहानी और अख़लाक़ी हालत पर भी असर डालती हैं। मुतवाज़िन ख़ुराक से इन्सान के अख़लाक़ भी बराबर रहते हैं और अल्लाह तआला की इबादत की तरफ़ भी तवज्जा रहती है। आपने फ़रमाया कि इस्लाम की ही ख़ूबसूरती है कि हर मामले में रहनुमाई करती है आपने फ़रमाया कि यह ख़ुदा तआला का उन लोगों पर और सारी दुनिया पर एहसान था कि सेहत की हिफाज़त के नियम निर्धारित फ़रमाए यहां तक कि यह भी फ़र्मा दिया कि

.....

कलवा वाशर बुआ वला तसर्रुफ़वा।

अर्थात बेशक खाओ और पियो मगर खाने में भी बेजा तौर पर कोई ज़ियादत कैफ़ीयत या कमीयत की ना करो

(उद्धिरत अय्यामुस्सुलह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 332)

क्योंकि इस से भी तवाज़ुन ख़राब होता है और इस का असर फिर रुहानी हालतों पर भी पड़ता है। अत: एक वास्तविक आबिद जो अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो कर इबादत करता है वह ना सिर्फ अपनी रुहानी हालत बेहतर करता है अल्लाह तआला से सम्बन्ध में बढ़ता है बल्कि अपनी जिस्मानी हालत भी ठीक करता है और अल्लाह तआला की नेअमतों का इस्तिमाल भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करता है। दुनिया की चीज़ें आराम तथा सुविधा और खाना पीना उस का उद्देश्य नहीं होता बल्कि जितनी ज़िन्दगी है इस में दुनिया की नेअमतों से फ़ायदा उठाते हुए अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए इस ज़िन्दगी को गुज़ारने की कोशिश करता है और यही उस का उद्देश्य होता है कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने की कोशिश करे। इसी तरह अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ भी ध्यान एक मोमिन रखता है। इस्लाम ही है जो जहां इन्सान को अल्लाह तआला का हक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाता है वहां अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने की तरफ़ भी ध्यान दिलाता है। अत: जैसा कि मैंने कहा इस मर्कज़ के बनने पर अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा करने के लिए हमें जहां अपनी इबादतों के स्तरों को बुलंद करने की ज़रूरत है वहां अख़लाक़ी स्तरों को भी बुलंद करने की ज़रूरत है और खासतौर पर इन नए हालात में जब ग़ैर लोगों की पड़ोसियों के इलाक़े में रहने वालों की हम पर एक नए दृष्टिकोण से नज़र होगी हमें भी इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम के दृष्टिकोण अपने कथन और कर्म से अपने अनुकरण से दिखाने की पहले से ज़्यादा ज़रूरत

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

होगी। अगर हम इस चीज़ को सामने रखते हुए अपनी ज़िंदगियां गुज़ारेंगे तो यही तब्लीग़ का एक बहुत बड़ा माध्यम बन जाएगी और यही हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बनाते हुए उस के फ़ज़लों को हासिल करने वाला बनाएगी।

यहां यह बात भी याद रखनी ज़रूरी है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों और बाहर मिलने वालों लोगों के साथ तो बड़े अच्छे होते हैं लेकिन अपने घर में बीवी के साथ या बच्चों के साथ उनके व्यवहार अच्छे नहीं होते। यह उनके व्यक्तिगत कर्म नहीं हैं। इस लिहाज़ से तो व्यक्तिगत हैं कि अल्लाह तआला उनकी ज़्यादतियों की पकड़ उनसे ही करेगा लेकिन यह बातें जमाअत की इकाई और शान्ति पर भी असर डालती हैं। घरों की जो बे-सुकूनी है बच्चों पर असर डालती है और बच्चे भविष्य में जमाअत का बेहतरीन हिस्सा बनने की बजाय जमाअत से दूर और धर्म से दूर जाने वाले बन जाते हैं और इस्लाम को फैलाने के लिए अपने धर्म को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करने के लिए यह ज़रूरी है कि अपनी अगली नस्लों को भी सँभाला जाए और अगर ऐसे कर्म होंगे तो अपनी नसलें बिगड़ जाएँगी। अत: उस के लिए भी हमें कोशिश करनी होगी इस लिहाज़ से यह जमाअत की चीज़ है क्योंकि वे बच्चे देखते हैं कि मेरा बाप बज़ाहिर तो बड़ा धार्मिक है और जमाअत में बड़ा अच्छा समझा जाता है लेकिन घर में इस का रवैय्या बिलकुल अलग है और यह रद्द कर्म फिर अगली नस्ल को बर्बाद कर देते हैं। फिर घर के झगड़ों से बीवी के घर वालों और पती के घर वालों में रंजिशें बढ़नी शुरू हो जाती हैं तो समाज का अमन भी बर्बाद होता है। अत: ऐसे घर जो हैं जहां इस किस्म की बातें पैदा हो रही हैं वह अपने घरों के अमन तथा सुकून को भी क़ायम रखने की कोशिश करें बल्कि यह फ़ैसला करें कि हम ने यह करना है। अल्लाह तआला ने हमें जमाअत के साथ जोड़ कर जो फ़ज़ल और एहसान किया है इस के शुक्राने के तौर पर हम अपनी हालतों को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करते हुए उस के आदेशों पर चलते हुए ढालने की कोशिश करेंगे। इसी तरह जिन औरतों में थोड़ी थोड़ी बात में ग़ुस्सा का पहलू ग़ालिब आ जाता है उन्हें भी अपने बच्चों की तर्बीयत के लिए अपनी हालतों में तब्दीली की ज़रूरत है इस रमज़ान को इस लिहाज़ से भी मुमताज़ बना लें कि अपने घरों को भी इस महीने की बरकतों से हम ने सँवारना है। रमज़ान में मस्जिदों की तरफ़ ध्यान पैदा हुआ है तो तक़्वा जो मस्जिदों की असल सुन्दरता है इस में हमने बढ़ना है और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तक़्वा पर चलते हुए अहंकार और गर्व और रऊनत इत्यादि से बचना है जितने ज़्यादा अल्लाह तआला के फ़ज़ल हम पर हो रहे हैं उतना ज़्यादा हमें इन बातों को सोचना चाहिए कि हम हर मामले में ख़ुदा तआला की रज़ा की राहों को तलाश करने की कोशिश करें। इन नमाज़ियों में से ना बनें जिन से अल्लाह तआला ने नाराज़ हो कर उनकी नमाज़ों को उनकी हलाकत का कारण बनाया है बल्कि उन लोगों में हमारी गन्ती हो जो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हैं उस के इनामों के वारिस हैं।

यह मर्कज़ जो अल्लाह तआला ने हमें प्रदान फ़रमाया है असल उद्देश्य तो इस का धग्रम की ज़रूरतों के लिए इस्तिमाल करना है लेकिन दुनियादारी के लिहाज़ से भी यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा फ़ज़ल है जो इस इनाम से उसने हमें नवाज़ा है जैसा कि मैंने पहले भी कहा हम अपनी कोशिश से इस को हासिल नहीं कर सकते थे। मानो इस मर्कज़ के माध्यम से हमें अल्लाह तआला ने धार्मिक और दुनियावी दोनों इनामों से नवाज़ है। अत: हर पहलू को सामने रखते हुए हमें अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी करनी चाहिए। एक दुनियादार जब इस सारे मंसूबे को देखता है तो वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता और जब उसे पता चलता है कि यह तो सिर्फ अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुम्किन हुआ है वर्ना हम एक छोटी सी जमाअत हैं और जिनके दुनियावी संसाधन बिलकुल सीमित हैं जमाअत के लोगों की क़ुर्बानियों से यह सब कुछ होता है तो वह बहुत हैरान होते हैं और उन लोगों को फिर यह एहसास होता है कि आज भी वह ज़िन्दा ख़ुदा है जो जिनकी मदद करना चाहता है वह करता है जिनको नवाज़ना चाहता है उनको नवाज़ता है। अत: ज़ाहिर में एक दुनियादार जो है इस माध्म से इस के ऊपर भी हमारी तालीम का असर होता है और वह इस लिहाज़ से ज़ेरे तब्लीग़ हो जाता है। ख़ुदा तआला के वजूद को दिखाने के लिए ज़रूरी है कि हमारे कथन तथा कर्म ऐसे हों जो दूसरों को प्रभावित करें। अत: जिस दृष्टिकोण से भी हम लें हमारे सिर अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते चले जाते हैं और झुकने चाहिऐं कि उसने हमें अपने फ़ज़ल से एक बस्ती आबाद करने की तौफ़ीक़ दी यद्यिप यह एक मुहल्ले के बराबर की आबादी है बल्कि इस से भी छोटी है लेकिन जैसा कि मैंने कहा उस की एहमीयत मर्कज़ होने के लिहाज़ से अहम है। दुनिया के इस हिस्से में अल्लाह तआला ने मर्कज़ की तौफ़ीक़ दी जो तौहीद से ख़ाली है बल्कि शिर्क से भरा हुआ है कि यहां से एक नए इरादे के साथ तौहीद को फैलाने के काम करो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मिश्न को पूरा करो और फिर वह दिन भी आए जब बस्तियों की बस्तियां और शहरों के शहर अल्लाह तआला की तौहीद का ऐलान करने वाले हों और आज जो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जो मुँह में आता है कह देते हैं बक देते हैं उस के बजाय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले आने में वह गर्व महसूस करने वाले हों और आप पर दुरूद भेजने वाले हों। अत: यह हमारी ज़िम्मेदारी है सिर्फ़ इस्लामाबाद में रहने वालों की नहीं इर्द-गिर्द आकर यहां आबाद होने वालों की नहीं है बल्कि इस देश में रहने वाले हर अहमदी और दुनिया के रहने वाले हर अहमदी की है कि वह यह कोशिश करे यह रास्ते तलाश करे कि हमने अल्लाह तआला की तौहीद के झंडे को किस तरह लहराना है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे दुनिया को किस तरह लाना है। किस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के मिश्न को पूरा करना है किस तरह ख़लीफ़ा वक़्त के मन्सूबों की पूर्णता के लिए उस का हाथ बटाना है। दुआओं से कर्म से किस तरह ख़लीफ़ा वक़्त की मदद करनी है। अल्लाह तआला हमें रमज़ान के महीना में इस मस्जिद और मस्जिद के उद्घाटन की तौफ़ीक़ दे रहा है। पहले खलि़फ़ाओं का तो मुझे इल्म नहीं लेकिन मेरे वक़्त में यह पहला अवसर है कि रमज़ान के महीना में मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है। अत: इस बरकतों वाले महीने और दुआओं की क़बूलीयत वाले महीने से सही लाभ उठाते हुए हुए अहमदियत की तरक़्क़ी और दुनिया के इस क्षेत्र में मर्कज़ की तामीर के मक़सद को पूरा करने के लिए दुआ करें और बहुत दुआ करें। इस मर्कज़ में भी बढ़ोतरी पैदा होती चली जाए उस के इर्दगिर्द अहमदी आबादी भी फैलती चली जाए। हम लोगों को इस्लाम के आग़ोश में आने का नज़ारा देखें। हम सारे मुख़ालिफ़ीन के मन्सूबों को तहस नहस होते देखें। रब्वह जाने के रास्ते भी खुलें और कादियान जो मसीह की तख़तगाह है वहां वापसी के रास्ते भी खुलें और मक्का और मदीना जाने के लिए रास्ते भी हमारे लिए खुलें कि वह हमारे आक़ा तथा मुताअ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बस्तियां हैं और इस्लाम के चिरस्थायी मर्कज़ हैं और असल इस्लाम का पैग़ाम उन लोगों को भी पहुंचे क़बूल करने वाले भी हों और वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की तसदीक़ करने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला जहालत की वजह से द्वेष रखने वालों की आँखें भी खोले और जो सिर्फ शरारत के लिए और अपने मक़सद के लिए साधारण मुस्लमानों के दिलों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत के ख़िलाफ़ द्वैष से भर रहे हैं उनकी पकड़ के भी अल्लाह तआला सामान करे और मुसलमान मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के हाथ पर जमा हो कर उम्मत वाहिदा बन कर इस्लाम की वास्तविक तालीम का अनुकरणीय नमूना बनने वाले हों और जल्द से जल्द ग़ैर मुस्लिम दुनिया भी इस्लाम के झंडे तले आए।

इस मस्जिद और इस सारे तामीराती मन्सूबा के बारे में भी कुछ थोड़ा सा बता दूं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह मस्जिद जो है इस की जो नमाज़ियों की गुंजाइश का क्षेत्र है यह लगभग 314 वर्ग मीटर है अर्थात 500 के लगभग नमाज़ी नमाज़ पढ़ सकते हैं। इसी तरह हाल है जिसमें 1200 के लगभग एक जगह और 110 के क़रीब एक जगह लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं फिर हाल के आगे इस की इन्टरेन्स पर एक खुली, छता हुआ एरिया भी है लगभग 300 आदमी नमाज़ पढ़ सकते हैं तो इस लिहाज़ से यहां गुंजाइश जो हो गई लगभग 1200 और 300, अर्थात 1500 कुल दो हज़ार से ऊपर की गुंजाइश हो गई। इसी तरह जो घर मैंने बताया कि घर बन गए हैं, दफ़तर बन गए हैं, ऑफ़िस के ब्लॉक्स तो तीन हैं लेकिन इस में लगभग पाँच दफ़ातर बन गए हैं। उम्मीद है कि ऐम टी ए के लिए भी वहां स्टूडियो इत्यादि के लिए जगह मयस्सर आ जाएगी। वह भी बन जाऐंगे फिर सारी सुविधाएं ग़ुस्ल ख़ानों

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इत्यादि की भी मयस्सर हैं फिर यह है कि सोलर अनर्जी के भी हर जगह पैनल लगे हुए हैं उस के अतिरिक्त सारी जो सुविधाएं मौजूदा ज़माने की हैं उपलब्ध करने की कोशिश की गई है।

यह मन्सूबा ऐसा है कि बावजूद बहुत बड़ा होने के इस के लिए कोई अलग से आर्थिक तहरीक नहीं की गई और जहां तक मेरा इल्म है यह पहला मन्सूबा है जो बिना किसी अलग तहरीक के पूर्णता को पहुंचा है और यह मस्जिद का जो डिज़ाइन है कुछ को अच्छा लगता है कुछ को नहीं लेकिन बहरहाल माहरीन के निकट यह है कि इस में डिज़ाइन ऐसा है कि बिजली की भी बचत है और एनर्जी की भी बचत है और इस के अतिरिक्त जो तामीर है वह भी माहिरीन के निकट आम तामीर जो है इस की तुलना में सस्ती है और मस्जिद के अंदर जो केलीग्राफ़ी की गई है यह इतनी ज़्यादा केलीग्राफ़ी पहले हमारी मस्जिदों में नहीं थी लेकिन क्योंकि इस मस्जिद का डिज़ाइन ऐसा था इस लिए मैंने उनको कहा कि करने में कोई हर्ज भी नहीं है अल्लाह तआला की सिफ़तें और नाम जो हैं वहां लिखे जाएं कोई हर्ज नहीं है इस के लिए रिज़वान बेग साहिब जो जलसा के दिनों में क़ुरआन प्रोजेक्ट भी करते हैं उन्होंने बड़ी मदद की उन्होंने लिखा। अल्लाह तआला उन को भी बदला दे और साथ उनके रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ के ऐडीटर आमिर सफ़ीर ने भी बड़ी मदद की है फिर दो हमारे मुरब्बी थे एक कैनेडा से इस साल पास हुए अब आए हुए थे बासिल बट वह और मूसा सत्तार और मुसव्विर दीन उन्होंने एक एक शब्द को हर्फ़ को लफ़्ज़ को नहीं हर्फ़ को ले के जोड़ के और स्पेशल गोन्द से फिर लगाया है बड़ी मेहनत का काम था जो किया है इन सब ने अल्लाह तआला सबको बदला दे। इसी तरह आडियो और वीडियो जो है यू.के की टीम जो है और हमारी ऐम टी ए की टीम उन्होंने बड़ी मेहनत से काम किया है अल्लाह तआला उनको भी बदला दे। तामीर का जो मन्सूबा था इस में एक मर्कज़ी कमेटी बनाई गई थी जो समय समय पर समीक्षा लेती रही और स्थायी निगरानी करने वाले भी दो शामिल किए थे जिनमें जो एक तो वक़्फ़ आरज़ी के इदरीस साहिब और एक स्थायी वक़्फ़ नौ लड़के इंजनीयर हैं हमारे वाक़फ़ ज़िन्दगी फ़ातह साहिब हैं उन्होंने स्थायी निगरानी भी रखी है। कुछ कमियां ख़ामियाँ होती हैं लेकिन बहरहाल उमूमी तौर पर निगरानी की गई और अभी तक काम करवा रहे हैं। इस के अतिरिक्त जो कमेटी के मैंबर जो वालनटीइर करते रहे यहां आ के और अपना वक़्त देते रहे और मैंबर भी थे वह चौधरी ज़हीर साहिब हैं उन्होंने बड़ा अच्छा काम किया अल्लाह तआला उनको भी बदला दे। व्यक्तिगत दिलचस्पी ले के अपने तजुर्बे से उन्होंने बहुत सारे काम ठीक करवाए।

जैसा कि मैंने कहा कि इस मंसूबे के लिए कोई तहरीक नहीं की गई और लेकिन बहुत बड़ा मन्सूबा था उस के साथ दूसरे देशों में भी बड़े मंसूबे चल रहे थे। ख़ास तौर पर कादियान में भी और माली में भी और तंज़ानिया इत्यादि में भी। कई बार मुझे फ़िक्र होती थी कि कहीं कोई मन्सूबा कुछ देर के लिए रोकना ना पड़े लेकिन अल्लाह तआला फिर अपना फ़ज़ल फ़र्मा देता था और तमाम मंसूबे पूर्ण होते चले गए तंज़ानिया में भी एक मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनाई गई है जिस में बहुत सारे ऑफ़िस और दूसरी चीज़ें हैं। नई बनी मस्जिद है। एक पूरा कम्पलेकस बनाया गया। माली में भी बहुत बड़ी मस्जिद बनाई है दूसरी इमारात बनी हैं एक बड़ा अच्छा और मुकम्मल कम्पलेकस है जो भी देखता है वहां बड़ी प्रशंसा करता है। माली में तो लोग अब यह बातें करते हैं कि इतनी बड़ी मस्जिद और दूसरी इमारतें जो बनाई गई हैं तो यह लगता है कि कोई बहुत बड़ी अमीर जमाअत है। दुनियावी लिहाज़ से तो हम अमीर नहीं हैं लेकिन हमारी असल इमारत जो है वह तो अल्लाह तआला अल्लाह तआला की वजह से है अल्लाह तआला के फ़ज़लों से है। अल्लाह तआला ने हमें अमीर बनाया है। अत: जब तक अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हम मांगते रहेंगे अल्लाह तआला हमेशा अपने फ़ज़ल नाज़िल फ़रमाता चला जाएगा। उस के हक़ अदा करते चले जाऐंगे तो अल्लाह तआला फ़ज़ल नाज़िल फ़रमाता चला जाएगा। अल्लाह तआला उस की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए।

पिछले दिनों अमरीका से एक डाक्टर साहिब गए हुए थे वक़्फ़ आरज़ी पर माली गए हुए थे। वह कहते हैं कि जब मैं एयरपोर्ट से जा रहा था तो मैंने दूर से बड़ी ख़ूबसूरत एक मस्जिद देखी और एक बहुत बड़ी बिल्डिंग देखी तो मैंने अपने ड्राईवर से पूछा यह किस की मस्जिद है? किसी ने बहुत ख़ूबसूरत बनाई हुई है तो उन्होंने कहा यह अहमदियों की मस्जिद है और यहीं तो आप जा रहे हैं। तो हर देखने वाला उस की तारीफ़ करता है। बहुत बड़ा मन्सूबा था अल्लाह के फ़ज़ल से मुकम्मल हुआ और वहां यह प्लैनिंग इत्यादि अहमदिया आर्कीटकट इंजीनीयर्ज़ एसोसीएशन ने की थी अल्लाह तआला उनको भी बदला दे उन्होंने यह काम किया। बहरहाल अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाता रहे और भविष्य में भी जो मंसूबे चल रहे हैं वह भी पूर्णता को पहुँचें और अल्लाह तआला अधिक मंसूबे पूर्ण करने की तौफ़ीक़ भी देता रहे। अल्लाह तआला ने प्राय जमाअत को जो माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ दी है इसी क़ुर्बानी से ये सारे मंसूबे पूर्णता को पहुंचे हैं और पहुंच रहे हैं और भविष्य में भी पहुँचेंगे इंशा अल्लाह। अल्लाह तआला सारे जमाअत के लोगों को माली सामर्थ्य को भी बढ़ाता चला जाए और उनके माल तथा नफ्सों में बरकत डाले इस लिहाज़ से मैं यह यह कह सकता हूँ कि यह मंसूबे किसी ख़ास तहरीक के बिना हैं और क्योंकि उमूमी जमाअत के बजट में से भी हैं इस लिए सारी दुनिया की जमाअतें इस में शामिल हैं और कोई अन्तर नहीं कि किस ने अधिक दिया किस ने कम दिया। अल्लाह तआला सबको बदला दे और उनके माल तथा नफ्सों में बरकत प्रदान फ़रमाता चला जाए।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 3 जून 2019 ई पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆

तहरीक जदीद और सादा ज़िन्दगी

अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है

खाओ और पीओ और इसराफ़ ना करो, क्योंकि वह (अल्लाह)इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता । (तफ़सीर सग़ीर सूरत अलाअराफ़ आयत 32)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने जब तहरीक जदीद को जारी फ़रमाया तो जमाअत के अन्दर इस निज़ाम को क़ायम करने के लिए और इस के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जमाअत के लोगों के सामने कुछ मांगें पेश कीं। उन में से पहली मांग सादा ज़िन्दगी धारण करने की था। आप इस बारे में फ़रमाते हैं ।

"इस ज़माना में माली क़ुर्बानी की बहुत ज़रूरत है। इस लिए सब मर्द और औरतें अपनी ज़िन्दगी को सादा बनाएँ और खर्चों को कम कर दें । ताकि जिस वक़्त ख़ुदा तआला की तरफ़ से क़ुर्बानी के लिए आवाज़ आए वे तैयार हों। क़ुर्बानी के लिए सिर्फ तुम्हारी नीयत ही फ़ायदा नहीं दे सकती। जब तक तुम्हारे पास सामान भी उपलब्ध ना हों।

(तक़रीर जलसा सालाना 26 मई 1935 प्रकाशन अलफ़ज़ल 2जून1935 ई)

अत: धर्म को वास्तविक अर्थों में दुनिया पर मुक़द्दम रखने के लिए यह भी ज़रूरी है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगियों को सादा इस उद्देश्य से बनाए ताकि वह, धर्म की तरक़्क़ी के लिए जो माली क़ुर्बानियों की ज़रूरत है, इस पर हमेशा लब्बैक कह सके । उस का मतलब यह नहीं कि हम ख़ुदा ताला की नेअमतों से फ़ायदा ना उठाएं बल्कि यह है कि दुनियावी आराम और सुविधाएं किसी हालत में भी हमारी धार्मिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में रोक ना बन जाएं।

हमारे वर्तमान इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस विषय पर रोशनी डालते हुए फ़रमाते हैं:

"हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि उद्देश्य का उच्च और उम्दा होना काफ़ी नहीं है जब तक क़ुर्बानी और फ़िदाईयत भी इस के अनुसार ना हो। हमें अल्लाह तआला की रज़ा उस वक़्त मिलेगी जब दुनिया हमारे दर्म पर हावी नहीं होगी बल्कि दर्म दुनिया पर हावी होगा। बेशक अल्लाह तआला ने दुनिया कमाने से मना नहीं किया। दुनिया की कोई चीज़ जिसे ख़ुदा तआला ने हराम नहीं किया , नाजायज़ नहीं है। अच्छा लिबास पहनना ,अच्छे किस्म के खाने खाना, अच्छे मकानों में रहना और उनकी सजावट करना उनमें से कोई चीज़ भी नाजायज़ नहीं है। सब जायज़ हैं। लेकिन इन चीज़ों का इस्लाम की तरक़्क़ी में रोक हो जाना नाजायज़ है

(प्रकाशन अलफ़ज़ल 9 दिसंबर 2014। ख़ुत्बा जुम्अ: 17 अक्तूबर 2014 ई)

इसी तरह फ़रमाया। अत: इस्लाम यह कहता है कि कभी भी तुम धार्मिक काम से ग़ाफ़िल ना हो तभी धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने का हक़ अदा कर सकते हो। इसी तरह अच्छे खाने हैं उनसे धर्म नहीं रोकता लेकिन उनका धर्म के रास्ते में रोक हो जाना नाजायज़ है। अत: हमें हमेशा अपने कामों में इन बातों को सामने रखना चाहिए कि जो चीज़ें धर्म के मामले में रोक हों उन्हें दूर किया जाए।

(प्रकाशन अलफ़ज़ल 9 दिसंबर 2014। ख़ुत्बा जुम्अ 17 अक्तूबर 2014 ई)

अल्लाह तआला हमें तहरीक जदीद की सादा ज़िन्दगी की मांग पर हक़ीक़त और ज़रूरत को समझते हुए धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने के वादा को पूरा करने की तौफ़ीक़ दे । आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

अहमदिया ख़िलाफ़त के माध्यम से ही दुनिया अब उम्मते वाहिदा बनने का नज़ारा भी देख सकती है और इस के बिना नहीं।

जब तक अहमदिया ख़िलाफ़त से ये सम्बन्ध और मुहब्बत रहेगी ख़ौफ़ की हालत भी अमन में बदलती रहेगी और अल्लाह तआला लोगों की तसल्ली के सामान भी पैदा फ़रमाता रहेगा। इन्शा अल्लाह।

ख़िलाफ़त की बातों पर अनुकरण करना भी तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि यह अल्लाह तआला के हुक्मों में से एक हुक्म है क़ौमी और रुहानी ज़िन्दगी के जारी रखने के लिए मोमिनीन के लिए ये इंतिहाई ज़रूरी चीज़ है कि अपनी इताअत के स्तर को बढ़ाएं।

बैअत के बाद अपनी सोचों को दरुस्त दिशा में रखना और पूर्ण इताअत के नमूने दिखाना इंतिहाई ज़रूरी है

आम इताअत यही है कि अल्लाह तआला के हक़ अदा करो। इस की इबादत भी सँवार कर करो ऐसे उच्च अख़लाक़ हों कि अहमदी और ग़ैर अहमदी में फ़र्क़ साफ़ नज़र आने लग जाए

दुनियावी ख़ाहिशात और उनके पीछे पड़ कर धर्म को दूसरी हैसियत देने की हालत भी शिर्क की हालत है

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने के लिए हमें अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है कि किस हद तक हम में इताअत का माद्दा है, किस हद तक हम अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण कर रहे हैं,किस हद तक हम अपनी इबादतों को सँवार रहे हैं,किस हद तक सुन्नत पर अनुकरण करने की कोशिश कर रहे हैं,किस हद तक हमारी इताअत के स्तर हैं

हर एक को कुछ ना कुछ तारीख़ से आगाही भी होनी चाहिए

जो ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला और इस के रसूल के हुक्मों पर अनुकरण करते रहेंगे, अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करेंगे, तज़्किया नफ़्स और तज़किया अम्वाल करते रहेंगे, इताअत में उच्च स्तर क़ायम करते रहेंगे वे इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद अहमदिया ख़िलाफ़त का बरकतों वाला क़ियाम की विस्तार से वर्णन नए मर्कज़ इस्लामाबाद की मस्जिद मुबारक के नींव के पत्थर रखे जाने के बारे में आदरणीय उसमान चीनी साहिब मरहूम का ज़िक्र ख़ैर और चीन में भी और दुनिया के हर देश में भी अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम के फैलने के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़, दिनांक 24 मई 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक,इस्लामाबाद। (टलफ़ोर्ड, यू.के.)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ
طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۵﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ
كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۵۸﴾

(सूरह नूर आयत नम्बर 52 से 58)

ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं सूरह नूर की आयतें हैं और आयत इस्तिख़लाफ अर्थात वे आयतें जिसमें अल्लाह तआला ने मोमिनों में ख़िलाफ़त का सिलसिला जारी रखने का वादा फ़रमाया है , इस आयत से पहले की भी आयतें हैं और बाद की भी आयतें और उन सारी आयतों में अल्लाह तआला और इस के रसूल की इताअत और आदेशों पर अनुकरण की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है। अगर यह होगा तो फिर अल्लाह तआला ख़िलाफ़त का इनाम देने का वादा पूरा फ़रमाएगा। अल्लाह तआला ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदलेगा और दुश्मनों को उनके अंजाम तक पहुंचाएगा। इन आयतों का अनुवाद यूं है कि

मोमिनों का जवाब जब वे अल्लाह और इस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं कि वे उनके बीच फ़ैसला करें यह हुआ करता है कि हमने सुना और हमने मान लिया और हमने इताअत की और वही लोग कामयाब हुआ करते हैं। और जो लोग अल्लाह और इस के रसूल की इताअत करें और अल्लाह से डरें और इस का तक़्वा धारण करें वे सफल हो जाते हैं। और वे लोग अल्लाह की पक्की कसमें खाते हैं कि अगर तो उनको आदेश दे तो वो शीघ्र घरों से निकल खड़े होंगे। कहो क़समें ना खाओ। हमारा आदेश तो तुम्हें सिर्फ ऐसी इताअत का है जो मारूफ़ इताअत है जो जन साधारण में इताअत समझी जाती है। अल्लाह इस से जो तुम करते हो यक़ीनन ख़बरदार है। तू कह अल्लाह की इताअत करो और इस के रसूल की इताअत करो अत: अगर वे फिर जाएं तो इस (रसूल) पर सिर्फ उस की ज़िम्मेदारी है जो उस के ज़िम्मा लगाया गया है और तुम पर इस की ज़िम्मेदारी है जो तुम्हारे ज़िम्मा लगाया गया है और अगर तुम उस की इताअत करो तो हिदायत पा जाओगे और रसूल के ज़िम्मा तो सिर्फ बात को खोल कर पहुंचा देना है। अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और यथा उचित अनुकरण करने वालों से वादा किया है कि वह उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा बना देगा। जिस तरह उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बना दिया था और जो धर्म उसने उनके लिए पसंद किया है वो उनके लिए उसे मज़बूती से क़ायम कर देगा और उनके ख़ौफ़ की हालत के बाद वह उनके लिए अमन की हालत तबदील कर देगा। वह मेरी इबादत करेंगे (और) किसी चीज़ को मेरा शरीक नहीं बनाएंगे

और जो लोग उस के बाद भी इनकार करेंगे वह नाफ़रमानों में से क़रार दिए जाऐंगे। और तुम सब नमाज़ों को क़ायम करो और ज़कातें दो और इस रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। और (हे सम्बोधित) कभी ख़्याल ना कर कि कुफ़्फ़ार ज़मीन में हमें अपनी तदबीरों से असहाय कर देंगे और उनका ठिकाना तो दोज़ख़ है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (अनुवाद तफ़सीरे सग़ीर)

अत: हर बात अल्लाह तआला ने खोल कर बयान फ़र्मा दी कि तुम हज़ार दावा करो कि तुम मोमिन हो, ईमान लाने वाले हो लेकिन जब तक हर इमतिहान और हर परीक्षा में दृढ़ क़दम रहते हुए अल्लाह तआला और इस के रसूल के आदेशों पर सच्चे दिल के साथ और पूर्ण यक़ीन से अनुकरण नहीं करोगे कामयाबी नहीं मिल सकती। अत: हक़ीक़ी कामयाबी पाने के लिए और सफल होने के लिए अल्लाह तआला और इस के रसूल की पूर्ण इताअत ज़रूरी है। अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए उस का ख़ौफ़ दिल में रखते हुए अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करना ज़रूरी है कि कहीं वह मेरा प्यारा महबूब ख़ुदा मेरे किसी कर्म से मुझ से नाराज़ ना हो जाए। और इसी तरह तक़्वा पर क़ायम होना ज़रूरी है कि हर नेकी और उच्च अख़लाक़ को इसलिए करना है कि अल्लाह तआला का यह आदेश है। जब यह होगा तो फिर कामयाबियां भी मिलेंगी और अल्लाह तआला की अमान भी हासिल रहेगी। अगर हम समीक्षा लें तो अक्सर अवसर पर यह नज़र आएगा कि इताअत के वह स्तर हासिल नहीं करते जो होने चाहिऐं। अगर किसी बात पर अनुकरण कर भी लें तो बड़ी बेदिली से अनुकरण होता है जो मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बातें हों। अल्लाह तआला और इस के रसूल के जो आदेश हैं, इन आयतें में इतनी बार जो इताअत का आदेश आया है यह ख़िलाफ़त के जारी रखने के वादे के साथ इन आयतों में आया है मानो अल्लाह तआला फ़र्मा रहा है कि ख़िलाफ़त का निज़ाम भी अल्लाह तआला और इस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का एक हिस्सा है। अत: ख़िलाफ़त की बातों पर अनुकरण करना भी तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि यह अल्लाह तआला के आदेशों में से एक आदेश है बल्कि एक क़ौमी और रुहानी ज़िन्दगी के जारी रखने के लिए मोमिनीन के लिए यह इंतिहाई ज़रूरी चीज़ है कि अपनी इताअत के स्तर को बढ़ाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यहां तक फ़रमाया है कि जिस ने मेरे निर्धारित अमीर की इताअत की उसने मेरी इताअत की और मेरी इताअत करने वाले ने ख़ुदा तआला की इताअत की और इसी तरह मेरे अमीर की ना-फ़रमानी मेरी ना-फ़रमानी है और मेरी ना-फ़रमानी ख़ुदा तआला की ना-फ़रमानी है।

(सही अल-बुख़ारी किताब अलआदेश हदीस 7137)

तो समय के ख़लीफ़ा की इताअत तो आम अमीर की इताअत से बहुत बढ़कर ज़रूरी है। दिली ख़ुशी के साथ पूर्ण इताअत के नमूने हमें सहाबा की ज़िन्दगियों में किस तरह नज़र आते हैं इस की एक मिसाल देता हूँ।

एक जंग में जंग की कमान हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के सपुर्द की गई लेकिन हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने किसी वजह से उनको बदल दिया और ठीक जंग की हालत में उनको बदला गया। तो बहरहाल इस हालत में समय के ख़लीफ़ा का आदेश आया कि अब कमान हज़रत अबू उबैदा करेंगे, उनको दे दी जाए। तो हज़रत अब्बू उबैदा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने इस ख़्याल से कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो बड़ी उम्दगी से कमान कर रहे हैं उनसे चार्ज नहीं लिया लेकिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने कहा कि आप फ़ौरी तौर पर मुझ से चार्ज लें क्योंकि यह समय के ख़लीफ़ा का आदेश है और मैं बिना किसी शिक्वे के या दिल में किसी किस्म का ख़्याल लाए बिना पूर्ण इताअत के साथ आपके आधीन काम करूँगा जिस तरह आप कहेंगे।

(उद्धरित तारीख़ तिबरी जिल्द 2 पृष्ठ 356-357 सन 13 हिजरी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1987 ई)

तो यह इताअत का स्तर है जो एक मोमिन का होना चाहिए ना यह कि अगर कोई फ़ैसला ख़िलाफ़ हो जाए तो शिक्वा शुरू कर दें। किसी ओहदेदार को हटा कर दूसरे को निर्धारित कर दिया जाए तो काम करना छोड़ दें। जो ऐसा करता है ना तो इस में इताअत है ना अल्लाह तआला का ख़ौफ़ है ना तक़्वा है।

अब मुझे पता लगा है कि कुछ सदर ऐसे हैं जिन्होंने नए नियम के अनुसार, जून में अपनी टर्म ख़त्म होने से पहले इसलिए काम छोड़ दिया है कि अब हम क्यों काम करें। क्या यह सिर्फ इसलिए काम कर रहे थे कि हम ने अब स्थायी ओहदेदार रहना है? उन्होंने जो ज़िम्मेदारियाँ मई जून के महीने में निभानी होती हैं इस पर ध्यान नहीं दे रहे। एक तो ऐसी सोच अपने धर्मिक काम में ख़ियानत है। दूसरे यह बाग़ियाना सोच है और अपने आपको ख़िलाफ़त की इताअत के दायरे से बाहर निकालने वाली बात है क्योंकि अब समय के ख़लीफ़ा ने इस क़ायदा को मंज़ूर कर लिया है कि सदर की टर्म छ: साल होगी इसलिए हम भी अब पूरे तरह दिल के जोश से काम नहीं करेंगे। अत: ऐसे लोगों को तक़्वा से काम लेना चाहिए और ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ करना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर बैअत इस बात पर ली थी कि सुनेंगे और इताअत करेंगे चाहे हमें पसंद हो या नापसंद।

(सही अल-बुख़ारी हदीस 7199)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अल्लाह तआला की इताअत से अपना हाथ खींचा वह अल्लाह तआला से क़यामत के दिन इस हालत में मिलेगा कि ना उस के पास कोई दलील होगी ना कोई बहाना होगा और जो शख़्स इस हाल में मरा कि उसने वक़्त के इमाम की बैअत नहीं की थी तो वह जाहिलियत और गुमराही की मौत मरा।

(सही मुस्लिम किताबुल इमारत हदीस (1851)

अत: हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमने वक़्त के इमाम की बैअत की और उन जाहिलों में शामिल नहीं हुए जो वक़्त इमाम के इंकारी हैं। लेकिन अगर हमारे कर्म इस क़बूल करने के बाद भी जहालत वाले रहे तो अपने आपको व्यावहारिक रूप से इस बैअत से बाहर निकालने वाली बात होगी और अल्लाह तआला और इस के रसूल की इताअत से भी बाहर निकल रहे होंगे।

अत: बैअत के बाद अपनी सोचों को दरुस्त दिशा में रखना और पूर्ण इताअत के नमूने दिखाना इंतिहाई ज़रूरी है। ज़माना के इमाम ने अपनी बैअत में आने वालों के स्तर के बारे में क्या फ़रमाया है। एक अवसर पर आप ने फ़रमाया कि:

"हमारी जमाअत में वही दाख़िल होता है जो हमारी तालीम को अपना अनुकरण का दस्तूर क़रार देता है और अपनी हिम्मत और कोशिश के अनुसार इस पर अनुकरण करता है। लेकिन जो केवल नाम रखा कर तालीम के अनुसार अनुकरण नहीं करता। वह याद रखे कि ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को एक विशेष जमाअत बनाने का इरादा किया है और कोई आदमी जो वास्तव में जमाअत में नहीं है। केवल नाम लिखाने से जमाअत में नहीं रह सकता। अर्थात व्यावहारिक हालत अगर इस तालीम के अनुसार नहीं तो सिर्फ नाम लिखवा कर जमाअत में शामिल होने वाली बात है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि असल में मेरी नज़र में तो वह जमाअत में नहीं है। आप फ़रमाते हैं "इस लिए जहां तक हो सके अपने कर्मों को इस शिक्षा के अधीन करो जो दी जाती है।

(मलफ़ूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 439)

और वह तालीम यह है। आप ने फ़रमाया कि फ़ित्ना की बात ना करो। बुराई ना करो। गाली पर सब्र करो। किसी का मुक़ाबला ना करो। अर्थात व्यर्थ और बेहूदा बातों में मुक़ाबला ना करो। इन बातों में मुक़ाबला ना करो कि अब अमुक ओहदेदार बन गया तो मैं ने इताअत नहीं करनी या मुझे हटाया गया तो मैंने इताअत नहीं करनी। फ़रमाया और जो मुक़ाबला करे इस से सुलूक और नेकी से पेश आओ। आम मामलों में भी, दैनिक मामलों में भी, लड़ाई झगड़ों में भी, अगर फ़ुज़ूलीयात पर, व्यर्थ बातों पर कोई मुक़ाबला होता भी है, तब भी क्षमा से काम लो बल्कि ना केवल क्षमा से काम लो करो बल्कि नेकी से पेश आओ। फ़रमाया कि मीठी ज़बान का उत्तम नमूना दिखलाओ। अच्छे आचरण से बात करो। नर्म भाषा प्रयोग करो। इस का अच्छा नमूना दिखाओ। सच्चे दिल से हर एक आदेश की इताअत करो कि ख़ुदा तआला राज़ी हो और दुश्मन भी जान ले कि अब बैअत कर के यह आदमी वह नहीं रहा जो कि पहले था। मुक़द्दमों में सच्ची गवाही दो। इस सिलसिला में दाख़िल होने वाले को चाहिए कि पूरे दिल, पूरी हिम्मत और सारे जान से सच्चाई का पाबंद हो जाए।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 413)

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह लोग बड़ी पक्की कस्में खाते हैं कि अगर तू आदेश दे तो हम यह कर देंगे और वह कर देंगे। जब आदेश दो तो इस पर पूरे नहीं उतरते। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि तुम ज़्यादा क़समें ना खाओ। बड़े बड़े वादे ना करो। अगर मारूफ़ इताअत कर लो, ऐसी इताअत जो जन साधारण में इताअत समझी जाती है तो हम समझेंगे कि तुम ने आदेश मान लिया वर्ना सिर्फ मुँह के दावे हैं और अल्लाह तआला तुम्हारे कर्म को भी जानता है और तुम्हारे दिलों की हालत से भी ख़बर रखता है। अत: आम इताअत यही है कि अल्लाह तआला के हक़ अदा करो। इस की इबादत भी सँवार कर करो। आजकल रमज़ान में जो ध्यान पैदा हुआ है इस को जारी रखो और क़ायम रखो। अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करते हुए उस के बंदों के हक़ भी अदा करो और जैसा कि

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है जो मैंने अभी बयान किया है कि हर किस्म के फ़ित्ने से बचो। हर किस्म की बुराई और लड़ाई और झगड़े से बचो। अपने आचरण अच्छे दिखाओ। ऐसे अच्छे अख़लाक़ हों कि अहमदी और ग़ैर अहमदी में अन्तर साफ़ नज़र आने लग जाए। सच्चाई पर हमेशा क़ायम रहो। अत: कि सारी किस्म की नेकियां करना ज़रूरी है और यही मारूफ़ इताअत है। इसी का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। इसी बात का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी इच्छा को प्रकट किया है और अपनी जमाअत के लोगों के लिए आदेश दिया है। और अहमदिया ख़िलाफ़त भी इन बातों के करने की तरफ़ ही ध्यान दिलाती रहती है। पिछले 111 साल हो गए ख़िलाफ़त की तरफ़ से उन्हीं बातों की तरफ़ ध्यान दिलाया जा रहा है और इसी तरह यह भी है कि इंतिज़ामी मामलों में भी पूर्ण इताअत का नमूना दिखाओ। सिर्फ धार्मिक या रुहानी मामलों में नहीं। जैसा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने दिखाया था और इस झगड़े में ना पड़ो कि यह बात मारूफ़ के अन्तर्गत में आती है या नहीं। हाँ अगर अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों के ख़िलाफ़ कोई बात है तो वह निस्सन्देह ग़ैर-मारूफ़ है। अत: यह जो हम अहद में दोहराते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त जो भी मारूफ़ फ़ैसला करेंगे उस की पाबंदी करनी ज़रूरी समझूँगा इस से हर एक अपनी बनाई हुई व्याख्या मारूफ़ फ़ैसला की ना निकालने लग जाए कि यह फ़ैसला मारूफ़ है और यह नहीं है। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि ने यह नहीं कहा था कि ठीक जंग के बीच जब फ़ौजें आमने सामने हैं और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि की हिक्मत भी बहुत अच्छी थी और मुस्लमानों को फ़ायदा भी हो रहा था उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि का आदेश जो आया वह ग़ैर-मारूफ़ था। नहीं बल्कि उन्होंने पूर्ण इताअत के साथ अबू उबैदह रज़ि के अधीन एक साधारण कमांडर की हैसियत से, फ़ौजी की हैसियत से लड़ने को ही बरकत समझा। जो लोग मारूफ़ और ग़ैर-मारूफ़ के उलझाओ और चक्करों में पड़ जाते हैं ऐसे ही लोगों के बारे में एक मौक़ा पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने फ़रमाया था कि:

"एक और ग़लती है वह इताअत दर मारूफ़ के समझने में है कि जिन कामों को हम मारूफ़ नहीं समझते इस में इताअत ना करेंगे। लोग ख़ुद ही फ़ैसला कर लेते हैं कि जो हम मारूफ़ नहीं समझते इसलिए इस में इताअत ना करें। आप रज़ि ने फ़रमाया कि यह शब्द नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भी आया है। जैसा कि फ़रमाया। वलअ यअ्सीनक फ़ी मअ्रूओ्फ़्। और ना ही मारूफ़ बातों में तेरी नाफ़रमानी करेंगे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल फ़रमाते हैं कि अब क्या ऐसे लोगों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह की बुराइयों की भी कोई सूचि बना ली है। आप की बुराइयों की या कमज़ोरीयों की नऊज़ बिल्लाह कोई सूचि बनाई हुई है। अर्थात कोई ऐसी सूचि बनाई हुई है जिन से यह पता चले कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये आदेश मारूफ़ हैं और ये नऊज़ बिल्लाह ग़ैर-मारूफ़ हैं। आप फ़रमाते हैं कि इसी तरह हज़रत साहिब अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बैअत की शर्तों में ताअत दर मारूफ़ लिखा है। इस में एक भेद है।

(हक़ायक़ुल फ़ुरक़ान जिल्द 4 पृष्ठ 75-76)

और वह यही राज़ है कि नबी और ख़लीफ़ा अल्लाह तआला के बताए हुए आदेशों के अनुसार आदेश देते हैं और जैसे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एक अवसर पर इस शब्द की इस तरह तशरीह फ़रमाई है कि यह नबी इन बातों का आदेश देता है जो ख़िलाफ़ अक़्ल नहीं हैं और उन बातों से मना करता है जिनसे अक़्ल भी मना करती है और पाक चीज़ों को हलाल करता है और नापाक को हराम ठहराता है और इस की तफ़सील अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन करीम में बयान फ़र्मा दी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बयान फ़र्मा दी। सारे आदेशों तथा मना करने के आदेशों, करने वाली बातें और ना करने वाली बातें खोल कर बयान फ़र्मा दीं और जो अल्लाह तआला और इस के रसूल की पैरवी करेंगे वही नजात पाएँगे। जो इन बातों पर अनुकरण करेंगे वही नजात पाएँगे। अत: हमेशा इस बात को याद रखना चाहिए कि ख़िलाफ़त की तरफ़ से भी अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण में शरीयत और सुन्नत के अनुसार ही आदेश दिए जाते हैं और दिए जाते रहेंगे। अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि अगर इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे वर्ना इस से हट कर कोई नजात का रास्ता नहीं है।

अल्लाह तआला फिर फ़रमाता है कि अल्लाह तआला और इस के रसूल की इताअत करने वालों और नेक अनुकरण करने वालों से अल्लाह तआला का ख़िलाफ़त जारी रहने का वादा है। नेक आमाल उनके ही नहीं हैं जो सिर्फ अपनी इबादतों की तरफ़ ध्यान देते हैं और अपनी इबादतें अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करते हैं और हर किस्म के शिर्क से बचते हैं। सिर्फ ज़ाहिरी शिर्क नहीं बल्कि दुनियावी इच्छाओं और उनके पीछे पड़ कर धर्म को दूसरी हैसियत देने की हालत भी शिर्क की हालत है। बेशक यह बहुत बड़ी नेकियां हैं लेकिन साथ ही इताअत जो है वह बहुत ज़रूरी है।

अत: ख़िलाफ़त का जो वादा है अगर उस के फ़ैज़ से सही फ़ायदा उठाना है तो फिर ना सिर्फ अपनी इबादतों की हिफ़ाज़त करनी ज़रूरी है। दुनियावी इच्छाओं के शिर्क से बचने की भी ज़रूरत है। समय के ख़लीफ़ा की पूर्ण इताअत करनी भी ज़रूरी है वर्ना फिर नाफ़रमानों में गिनती होगी और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि असल में तो फिर बैअत से बाहर हो जाऐंगे। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मोमिनों की जमाअत, ख़िलाफ़त से जुड़े रहने वालों की जमाअत नमाज़ों को क़ायम रखने वाली जमाअत है। नमाज़ों के क़ियाम की तरफ़ ध्यान देने वाली है। मस्जिदों को आबाद करने वाली है और ज़कात देने वाली है। अपने मालों का तज़किया करने वाली है। ख़ुदा और इस के रसूल और इस के धर्म के लिए माली क़ुर्बानियां देने वाली है और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर यथा योग्य अनुकरण करने वाली है और जब यह हालत होती है तो फिर अल्लाह तआला ऐसे बंदों पर रहम फ़रमाता है।

अत: अल्लाह तआला के रहम को जज़्ब करने के लिए अपनी हालतों को संवारने की ज़रूरत है और जब अल्लाह तआला का रहम हमें अपनी रहमानियत और रहीमीयत की चादर में ले-लेगा तो फिर दुश्मन का हर धोखा उस पर उल्टा दिया जाएगा और वह अपने बदतरीन अंजाम को पहुँचेगा। इन्शा अल्लाह। अत: अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने के लिए हमें अपने समीक्षा करने की ज़रूरत है कि किस हद तक हम में इताअत का माद्दा है। किस हद तक हम अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण कर रहे हैं। किस हद तक हम अपनी इबादतों को सँवार रहे हैं। किस हद तक सुन्नत पर अनुकरण करने की कोशिश कर रहे हैं। किस हद तक हमारी इताअत के स्तर हैं। ये समीक्षा ख़ुद हमें अपने आप से लेनी चाहिए।

अब मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हवाले से कुछ बातें पेश करूँगा जो आप ने विभिन्न वक़्तों में बयान फ़रमाईं कि किस तरह जमाअत को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अस्सलाम की वफ़ात के बाद ऐसे हालात का सामना करना पड़ा जो हर एक को बेचैन कर रहे थे और फिर ख़िलाफ़त ने सुकून बख़्शा। वे लोग जो बाद में ख़िलाफ़त की बैअत से हट गए और पैग़ामी या ग़ैर मुबाईन कहलाए उनका पहले क्या व्यवहार था और फिर ख़िलाफ़त सानिया के चयन के बाद क्या व्यवहार था? पहले और फिर बाद में किस किस्म के उनके ख़्यालात थे? फिर दुश्मन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद किस तरह ख़ुश था लेकिन हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के ख़लीफ़ा चुनने के बाद किस तरह खिसियाहट का इज़हार किया और फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की वफ़ात के बाद मुख़ालिफ़ीन अहमदियत को एक और उम्मीद पैदा हुई कि अब जमाअत टुकड़े टुकड़े हो जाएगी लेकिन फिर अल्लाह तआला ने मोमिनों की जमाअत को किस तरह सँभाला और फिर किस तरह ख़ौफ़ की हालत को अमन की हालत में बदला? ये कुछ तारीख़ी हवाले हैं जो नौजवानों और कम ज्ञान वालों की ईमान में मज़बूती के लिए भी ज़रूरी हैं ये आपके सामने रखना चाहता हूँ और इसलिए भी ज़रूरी हैं कि हर एक को कुछ ना कुछ तारीख़ से भी आगाही चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त मुस्लमानों की जो हालत थी वह बयान फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के वक़्त भी, विसाल के वक़्त भी हमारा ये हाल था। आप फ़रमाते हैं कि

" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय भी जमाअत की वही मानसिक सोच थी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में सहाबा रज़ि. की थी। अत: हम सब यही समझते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अभी देहान्त नहीं पा सकते। जिसका परिणाम यह था कि एक पल के लिए भी हमारे दिल में यह विचार नहीं आया था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब देहान्त पा जाएँगे तो क्या होगा। मैं उस समय बच्चा नहीं था बल्कि जवान था और लेख लिखा करता था और एक पत्रिका का एडीटर भी था। मगर मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि एक मिनट तो क्या कभी एक सेकेण्ड के लिए भी मेरे

दिल में यह विचार नहीं पैदा हुआ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम देहान्त पा जाएँगे। हालाँकि आख़िरी वर्षों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लगातार ऐसे इल्हाम होते रहे जिनमें आपके देहान्त की भविष्यवाणी होती थी और आख़िरी दिनों में तो उनकी अधिकता और भी बढ़ गयी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ऐसे निरन्तर इल्हामों के बावजूद कि जिनमें आपके देहान्त की तिथि और वर्ष भी निर्धारित होता था और हम किताब अलवसीयत भी पढ़ते थे, मगर हम यही समझते थे कि यह बातें सम्भवत: आज से दो शताब्दी बाद पूरी होंगी। इसलिए इस बात का दिल में ख़याल भी नहीं आता था कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम देहान्त पा जाएँगे तो क्या होगा। हम समझते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे जीते जी देहान्त नहीं पा सकते। इसलिए जब सचमुच आपका देहान्त हो गया तो हमारे लिए यह विश्वास कर पाना मुश्किल था कि आप मृत्यु पा चुके हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि देहान्त के बाद जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नहला कर कफ़न पहनाया गया तो चूँकि कई बार हवा के झोंके से कपड़ा हिल जाता या कभी-कभी मूछें हिल जातीं तो कुछ लोग दौड़ते हुए आते और कहते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो ज़िन्दा हैं, हमने उनका कपड़ा हिलते हुए देखा है कई कहते कि हमने मूँछों के बालों को हिलते हुए देखा है और कई कहते कि हमने कफ़न को हिलते हुए देखा है।

इसके बाद जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शव को क़ादियान लाया गया तो उसे बाग़ में एक मकान के अन्दर रख दिया गया। प्रात: आठ-नौ बजे का समय होगा(यह घटना वर्णन करने के बाद कि वफात के बाद तो हम सब की यह अवस्था थी फिर कहते हैं कि जब लाश कादियान पहुंची है आठ बजे का समय होगा) ग ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बाग़ में आए और मुझे एकान्त में ले जाकर कहने लगे कि मियाँ! कुछ सोचा भी है कि अब हज़रत साहब के देहान्त के बाद क्या होगा। मैंने कहा कि कुछ होना तो चाहिए, लेकिन क्या हो इसके बारे में मैं कुछ कह नहीं सकता। वह कहने लगे मेरे निकट हम सबको हज़रत मौलवी साहिब(हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह तआला अन्हो) की बैअत कर लेनी चाहिए। उस समय कुछ उम्र के लिहाज़ से और कुछ इस कारण से कि मुझे पूरी तरह जानकारी न थी मैंने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो यह कहीं नहीं लिखा कि हम आपके बाद किसी और की बैअत कर लें, इसलिए हम मौलवी साहिब की बैअत क्यों करें। अप लिखते हैं कि यद्यपि "अलवसीयत" में इसका वर्णन मौजूद था, लेकिन उस समय मेरा विचार उधर न गया उन्होंने इस पर मेरे साथ बहस शुरू कर दी और कहा कि यदि इस समय एक व्यक्ति के हाथ पर बैअत न की गयी तो हमारी जमाअत नष्ट हो जाएगी। फिर उन्होंने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहान्त के बाद भी तो यही हुआ था कि क़ौम ने हज़रत अबूबकर रज़ि. की बैअत कर ली थी।(यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात थी कि ख्वाजा साहिब फरमा रहे थे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद क़ौम ने अबूबकर की बैअत कर ली थी और आप को ख़लीफा स्वीकार कर लिया था फिर ख्वाजा साहिब ने कहा कि) इसलिए इस समय भी हमें एक व्यक्ति के हाथ पर बैअत कर लेनी चाहिए और इस पद के लिए हज़रत मौलवी साहिब से बढ़कर हमारी जमाअत में और कोई व्यक्ति नहीं। मौलवी मुहम्मद अली साहिब की भी यही राय है और वह कहते हैं कि तमाम् जमाअत को मौलवी साहिब की बैअत कर लेनी चाहिए। अन्तत: सारी जमाअत ने एकमत होकर हज़रत हाफ़िज़ हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब की सेवा में विनती की कि आप हम लोगों की बैअत लें। इस पर बाग़ में सारे लोग जमा हुए और हज़रत हाफ़िज़ हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब ने एक तक़रीर की और कहा कि मुझे इमामत की कोई चाहत नहीं मैं चाहता हूँ कि किसी और की बैअत कर ली जाए। अत: उन्होंने इस सन्दर्भ में पहले मेरा(हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते है? कि) मेरा नाम लिया फिर हमारे नाना जान मीर नासिर नवाब साहिब का नाम लिया। फिर हमारे बहनोई नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब का नाम लिया। इसी तरह कई और लोगों के नाम लिए। लेकिन हम सब लोगों ने एकमत होकर यही कहा कि आप ही ख़िलाफ़त के इस पद के योग्य हैं। फिर सब लोगों ने उनकी बैअत कर ली।

(उद्धरित ख़िलाफते राशिदा अन्वारुल उलूम जिल्द नम्बर 15 पृष्ठ 489 से 491)

बल्कि् कुछ रिवायतों के अनुसार तो ख़्वाजा साहिब ने यह इश्तिहार भी, ऐलान भी प्रकाशित करवाया था कि रिसाला अल्वसीयत की दृष्टि से हमें अपना एक वाजिब इताअत ख़लीफ़ा चुनना चाहिए और इस के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का नाम पेश किया था। तो बहरहाल ये पहले उन लोगों की एक सोच थी। हालात की वजह से अपने मक़सदों को पूरा करने के लिए हो सकता है यह सोच हो। इन लोगों ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की बैअत तो कर ली लेकिन दिल में जो इताअत ख़िलाफ़त की सच्ची रूह होनी चाहिए वह नहीं थी और दिल में कुछ और था। इसलिए इस तदबीर और फ़िक्र में भी रहते थे कि किस तरह ख़िलाफ़त पर अंजुमन को उच्च समझा जाए या किया जाए। और फिर सब इख़तियार अंजुमन के माध्यम से अपने क़बज़े में ले लें। ये भी इन बड़े लोगों का ख़्याल था। इन लोगों की इस नीयत का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि अभी बैअत पर पन्द्रह-बीस दिन ही गुज़रे थे कि एक दिन मौलवी मुहम्मद अली साहिब मुझे मिले और कहने लगे कि मियाँ साहिब* कभी आपने इस बात पर ग़ौर भी किया है कि हमारे सिलसिले का निज़ाम किस तरह चलेगा* मैंने कहा कि इस पर अब और ग़ौर करने की क्या ज़रूरत है। हमने हज़रत मौलवी साहिब की बैअत तो कर ली है। वह कहने लगे वह तो हुई पीरी मुरीदी। प्रश्न यह है कि सिलसिले का निज़ाम किस तरह चलेगा। मैंने कहा कि मेरे निकट तो अब यह बात ग़ौर करने के योग्य ही नहीं क्योंकि जब हमने एक आदमी की बैअत कर ली है तो वह इस बात को अच्छी तरह जान सकता है कि किस तरह सिलसिले का निज़ाम बनाना चाहिए। हमें उसमें दख़ल देने की क्या ज़रूरत है। इस पर वह चुप तो हो गए मगर कहने लगे यह बात ग़ौर के क़ाबिल है।

(उद्धरित ख़िलाफते राशिदा अन्वारुल उलूम जिल्द नम्बर 15 पृष्ठ 491)

तसल्ली नहीं हुई। तो इस बात से उन लोगों के अंदरूनी हालतों का पता चल जाता है। अंदरूनी दिली हालत का पता चल जाता है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की बैअत भी किसी मक़सद के लिए की गई थी, दिल से नहीं। इसलिए दिलों के अमन भी क़ायम नहीं रहे, सुकून भी क़ायम नहीं रहा। अल्लाह तआला का ख़िलाफ़त की बैअत के साथ अमन की हालत पैदा करने का जो वादा है वह उनमें पैदा नहीं हो सका। इताअत जो थी, पूर्ण इताअत उस के अंदर वह रहना नहीं चाहते थे और इस रुहानी निज़ाम को भी दुनियावी निज़ाम की तरह चलाना चाहते थे और फिर नतीजा भी देख लिया कि अब नाम के ये लोग रह गए हैं। कुछ एक या शायद कहीं कुछ सौ हूँ। बल्कि हक़ीक़त में कुछ एक ही कहना चाहिए जो उनके बनाए हुए निज़ाम के अनुसार उनके साथ हैं और जो ख़िलाफ़त के अन्तर्गत जमाअत है वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब दुनिया के 212 देशों में क़ायम हो चुकी है।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि दुश्मन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर जमाअत के भविष्य के बारे में क्या इज़हार किया करता था, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़ौत हुए तो आम तौर पर ख़याल किया जाता था कि अब ये सिलसिला तबाह हो जाएगा और दुश्मन ख़ुश था कि चंदा आना बंद हो जाएगा और जमाअत की तरक़्क़ी रुक जाएगी क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोग चंदा देते थे। मगर जब लोगों ने एक दो साल के बाद देखा कि जमाअत लोगों की संख्या के लिहाज़ से भी बढ़ गई है क़ुर्बानी के लिहाज़ से भी बढ़ गई है और धर्म की इशाअत के लिहाज़ से भी बढ़ गई है तो उन्होंने ये नई बात बना ली कि असल में मौलवी नूरुद्दीन साहिब जमाअत में एक बहुत बड़े आलिम हैं और सिलसिले की सारी तरक़्क़ी का इन्हिसार इन्ही पर है और मिर्ज़ा साहिब की ज़िन्दगी में भी सारे काम मौलवी साहिब ही करते थे यद्यपि ज़ाहिर में मिर्ज़ा साहिब का नाम रहता था। बल्कि आप रज़ि फ़रमाते हैं कि कई मौलवी तर्ज़ के लोग जो ज़ाहिरी बातों की क़दर ज़्यादा करते हैं वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी कहा करते थे कि इस सिलसिले को मौलवी नूरुद्दीन रज़ि चला रहे हैं। उन्होंने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की वफ़ात के बाद देखा कि मौलवी साहिब रज़ि के ज़माने में सिलसिला पहले से ज़्यादा तरक़्क़ी कर रहा है तो दूसरा गिरोह जो मौलवियों का था उन्होंने अपनी बात को बिलकुल पल्टा और उन्होंने कहना शुरू कर दिया, ख़ुश हो कर यही कहना शुरू कर दिया कि हम नहीं कहते थे कि सारी काम मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ि कर रहे हैं। इसलिए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा और मौलवी साहिब रज़ि, हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि की वजह से ही जमाअत चल रही है।

(उद्धरित ख़ुतबाते महमूद जिल्द 21 पृष्ठ 413)

फिर एक मौलवी का इस बारे में ज़िक्र करते हुए आप रज़ि फ़रमाते हैं कि गुजरात के दोस्तों ने मुझे सुनाया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़ौत हुए तो एक अहले हदीस मौलवी ने हमें कहा कि अब तुम लोग क़ाबू आए हो क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि हर नबुव्वत

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 4 July 2019 Issue No. 27

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

के बाद ख़िलाफ़त होती है। (तुम जो कहते हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नबी हैं, चाहे ग़ैर शरई नबी हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में नबुव्वत मिली है लेकिन कहते तो यह हो कि नबुव्वत है तो नबुव्वत के बाद तो ख़िलाफ़त होती है) और तुम में ख़िलाफ़त अब नहीं होगी। तुम लोग अँग्रेज़ी जानने वाले हो इसलिए ख़िलाफ़त की तरफ़ तुम नहीं जाओगे। वह दोस्त बताते हैं कि दूसरे दिन तार प्राप्त हुई, (इस ज़माने में तारें चला करती थीं, डाकखाने के द्वारा तार जाया करती थी। आजकल तो एक सैकिण्ड में यहां से ख़बरें इंटरनैट के द्वारा, फ़ोन के द्वारा वाइरल (viral) हो जाती हैं, लेकिन इस ज़माने में तार का निज़ाम था और तार भी दूसरे तीसरे दिन कई बार पहुँचती थी। तो बहरहाल कहते हैं दूसरे दिन तार प्राप्त हुई)कि जमाअत ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ि की बैअत कर ली है और उनको अपना ख़लीफ़ा बना लिया है। जब अहमदियों ने इस मौलवी को बताया तो कहने लगा कि नूरुद्दीन तो बड़ा पढ़ा लिखा आदमी है। इसलिए उसने जमाअत में ख़िलाफ़त क़ायम कर दी। अगर उस के बाद ख़िलाफ़त रही तो फिर देखेंगे। फिर आप रज़ि फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल फ़ौत हुए तो कहने लगा कि इस वक़्त और बात थी। अब कोई ख़लीफ़ा बनेगा तो देखेंगे। दोस्त बताते हैं कि अगले दिन तार पहुंच गई कि जमाअत ने मेरे हाथ पर बैअत कर ली है। इस पर कहने लगा। यारो तुम बड़े अजीब लोग हो तुम्हारा कोई पता नहीं लगता।

(उद्धरित नबुव्वत और ख़िलाफ़त अपने वक़्त पर ज़हूर पज़ीर हो जाती हैं, अन्वारुल उलूम जिल्द 18 पृष्ठ 242)

माना फिर भी नहीं। तो अब भी यही कहते हैं और इसी वजह से उनमें हसद की आग निरन्तर लगी हुई है जैसा कि मैं पहले भी कई बार बता चुका हूँ कि इंतिख़ाब ख़िलाफ़त ख़ामिसा के वक़्त एक मौलवी साहिब कहने लगे कि सारा कुछ नज़ारा मैंने देखा है। लगता तो यही है कि अल्लाह तआला की व्यावहारिक गवाही तुम लोगों के साथ है लेकिन ये निशान देखकर भी मानने के बजाय हसद और विरोध और द्वेष में बढ़ते चले जा रहे हैं। बहरहाल अल्लाह तआला तो ख़िलाफ़त से जुड़ी जमाअत को तरक़्क़ी दे रहा है। जमाअतें दुनिया में फैल रही हैं और दूर दराज़ देशों में बैठे हुए भी ख़िलाफ़त से वफ़ा का सम्बन्ध रखे हुए हैं और इस में बढ़ते चले जा रहे हैं।

अल्लाह तआला ख़िलाफ़त और जमाअत से जुड़ने वालों की रहनुमाई भी फ़रमाता है और उनको ख़ुद इस ख़िलाफ़त की तरफ़ लेकर भी आता है। किस तरह लेकर आता है? इस की एक दो मिसालें में पेश कर देता हूँ। जैसा कि मौलवी साहिब ने कहा था कि अल्लाह तआला की व्यावहारिक गलाही तुम्हारे साथ है तो अल्लाह तआला की व्यावहारिक गवाही के साथ होने की एक मिसाल यह है और यह इसलिए है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी ग़ुलाम हम हैं और अल्लाह तआला की हक़ीक़ी तालीम , असल तालीम को हम दुनिया में फैला रहे हैं। गिनी बसाऊ एक दौर दराज़ देश है। वहां की एक बूढ़ी औरत हैं कहती हैं कि एक दिन मैंने ख़्वाब में देखा कि हमारे मिशनरी उन्हें एक किताब देते हैं और कहते हैं कि तुम्हारी नजात इसी किताब में है। कहती हैं जब मैं ख़्वाब में किताब खौलती हूँ तो इस में एक तस्वीर भी होती है। मैं मिशनरी से पूछती हूँ कि यह कौन हैं तो वह बताते हैं कि यह ख़लीफ़तुल मसीह हैं जिन को अल्लाह तआला ने अब चुना है। कहते हैं अगले दिन वह औरत हमारे मिशनरी के पास आएं तो मिशनरी ने उन्हें बताया कि आपकी ख़्वाब तो किसी ताबीर की मुहताज नहीं है। अल्लाह तआला ने ख़ुद आपकी रहनुमाई कर दी है। इस पर वह औरत कहने लगीं कि ख़ुदा की क़सम! मैं आज से अहमदी हूँ और वास्तम में अहमदियों का ख़लीफ़ा ख़ुदा तआला का बनाया हुआ है। यह ख़िलाफ़त जो जारी है यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है। अत: उसी वक़्त उसने बैअत कर ली और बैअत करने के बाद सारे जमाअत के प्रोग्रामों में वह हिस्सा लेती हैं और अपनी तौफ़ीक़ के अनुसार चंदा भी देती हैं और बड़ी बहादुरी के साथ तब्लीग़ भी कर रही हैं और लोगों को बताती हैं कि किस तरह अल्लाह तआला ने ख़ुद उनकी रहनुमाई की।

इसी तरह एक मिस्र के दोस्त हैं वह कहते हैं कि मैं बहुत अधिक बुराईयों में पड़ा हुआ था, झगड़ालू किस्म का था और ऐम टी ए पर आपके ख़ुत्बे देखकर मुझे धर्म की तरफ़ रग़बत पैदा हुई और फिर मैंने अहदकर लिया कि मैं अहमदी हो जाऊँगा क्योंकि यही ख़िलाफ़त है जो हमारी सही रहनुमाई कर रही है। इसी तरह कुछ और मिसालें हैं कि किस तरह अल्लाह तआला विभिन्न वक़्तों में विभिन्न जगहों पर, विभिन्न देशों में लोगों की रहनुमाई कर रहा है।

मिशनरी इंचार्ज साहिब कहते हैं कि कैमरोन के शहर मर्वा में लोग ऐम.टी.ए देखते हैं और ऐम.टी.ए अफ़्रीक़ा जब से शुरू किया गया है बहुत प्रचुरता से लोग देख रहे हैं और वहां खासतौर पर ख़ुत्बों को ज़रूर सुनते हैं और ख़ुत्बों को सुनने के बाद उनमें एक तबदीली पैदा हो रही है और जमाअत की तरफ़ रुझान भी बढ़ रहा है। और जो अहमदी हैं वे मज़बूत ईमान भी हो रहे हैं और ज़्यादा से ज़्यादा उनकी कोशिश है अपने आपको ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखें, वाबस्ता करें और पूर्ण इताअत के नमूने भी दिखाएंगे। तो बहरहाल यह जो ख़िलाफ़त से सम्बन्ध और मुहब्बत है यह अल्लाह तआला की पैदा की हुई है और जब तक अहमदिया ख़िलाफ़त से यह सम्बन्ध और मुहब्बत रहेगी ख़ौफ़ की हालत भी अमन में बदलती रहेगी और अल्लाह तआला लोगों के तसल्ली के सामान भी पैदा फ़रमाता रहेगा। इन्शा अल्लाह।

विभिन्न जगहों पर जब मैं दौरों पर भी जाता हूँ तो लोग बताते हैं, उस के इलावा बहुत सारे ख़त भी आते हैं कि किस तरह उनको अहमदियत क़बूल करने के बाद अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त से सम्बन्ध पैदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और किस तरह उनकी ऐसी हालतों को जहां वे इंतिहाई परेशानी की हालत में थे अमन भी प्रदान फ़रमाया। अत: जो ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला और इस के रसूल के आदेशों पर अनुकरण करते रहेंगे, अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करेंगे, तज़किया नफ़्स और तज़किया अम्वाल करते रहेंगे, इताअत में उच्च स्तर क़ायम करते रहेंगे वे इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस बनते रहेंगे। अत: अहमदिया ख़िलाफ़त के माध्यम से ही दुनिया अब उम्मते वाहिदा बनने का नज़ारा भी देख सकती है और इस के बिना नहीं। अत: उस को प्राप्त करने के के लिए, अल्लाह तआला के फ़ज़लों को स्थायी तौर पर हासिल करने के लिए जमाअत के लोगों को, हम में से हर एक को हमेशा दुआएं करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला इस फ़ैज़ को हम में हमेशा जारी रखे। और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हम सारी दुनिया को मुसलमान बनाने वाले हों, उम्मते वाहिदा बनाने वाले हों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले लाने वाले हूँ। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

पिछले ख़ुत्बे में जो यहां मस्जिद का इफ़्तिताह का ख़ुत्बा था , मैं एक ज़िक्र करना भूल गया था कि इस मस्जिद की जब बुनियाद रखी गई थी तो मैं कैनेडा के सफ़र पर था शायद। शायद नहीं बल्कि था या जा रहा था और जब उन्होंने तारीख़ निर्धारित की है और जो तारीख़ थी वह मेरे सफ़र पर जाने के बाद की थी तो बहरहाल सफ़र की वजह से ईंट पर दुआ करवा के उन्होंने मुझ से ले ली थी और फिर उस मस्जिद की बुनियाद 10 अक्तूबर 2016 ई को दुआओं के साथ आदरणीय उसमान चीनी साहिब मरहूम ने रखी थी और इस मस्जिद की बुनियाद के साथ ही इस सारे प्रोजैक्ट की भी तामीर शुरू हुई थी। तो बुनियाद इस मस्जिद की आदरणीय उसमान चीनी साहिब ने रखी थी और इस तरह हम कह सकते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से चीनी क़ौम का भी इस में हिस्सा है और इसलिए हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला चीन में भी इस्लाम को जल्द फैलाने की हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आदरणीय उसमान चीनी साहिब की बड़ी इच्छा थी, हर वक़त इस फ़िक्र में रहते थे कि चीन में किसी तरह अहमदियत और इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच जाए। हमें जहां उनके स्तर की बुलंदी के लिए दुआ करनी चाहिए वहां चीन में भी और दुनिया के हर मुल्क में भी अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम के फैलने के लिए बहुत दुआएं करनी चाहिएं। अल्लाह तआला इस की तौफ़ीक़ दे।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 10 जून 2019 ई पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad